खंड 2
तथ्यों (डेटा) का अन्वेषण

इकाई 4 मानवविज्ञान में क्षेत्रकार्य परंपरा

इकाई 5 शोध प्रारूप (डिजाइन)

इकाई 6 प्रविधि एवं प्रणाली

इकाई 7 उपकरण एवं तकनीक

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 मानवविज्ञान में क्षेत्रकार्य परंपरा*

इकाई की रूपरेखा

4.0 परिचय

4.1 आर्म–चेयर मानवविज्ञानी और डेटा संग्रह

4.2 क्षेत्रकार्य(फील्डवर्क) की शुरूआत

4.3 मानव विज्ञान में क्षेत्रकार्य की प्रासंगिकता

4.4 एक्कीसवीं सदी में क्षेत्रकार्य(फील्डवर्क)

4.5 क्षेत्रकार्य में नैतिकता

4.6 सारांश

4.7 संदर्भ

4.8 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई को पढ़ने के बाद, छात्र सीखेंगेः

- क्षेत्र विज्ञान के रूप में मानव विज्ञान को परिभाषित करना;
- आर्म–चेयर मानवविज्ञान की आलोचनाओं की व्याख्या करना;
- मानवविज्ञान में क्षेत्रीय कार्य के प्रारंभ को समझने की चेष्टा करना ;
- मानव वैज्ञानिक क्षेत्रीय कार्य की प्रासंगिकता की चर्चा करना;
- इक्कीसवीं सदी में फील्ड का वर्णन करना;
- क्षेत्रीय कार्य में नैतिकता के महत्व का मूल्यांकन करना;

4.0 परिचय

यह इकाई इस बात पर प्रकाश डालेगी कि मानवविज्ञान में डेटा की जाँच कब शुरू हुई। तथ्यों के जाँच का पहला चरण डेटा संग्रह है। मानव विज्ञान में डेटा संकलन क्षेत्रीय कार्य के साथ प्रारंभ होता है। एक मानवविज्ञानी के लिए क्षेत्रीय कार्य एक अनिवार्य हिस्सा है क्योंकि वे प्राथमिक सूचक के रूप में स्वयं–शामिल होकर फिर सूचनादाता के माध्यम से डेटा संग्रह करते हैं। यह इकाई मानव विज्ञान में क्षेत्रीय कार्य की उत्पत्ति पर प्रकाश डालेगा–इसकी शुरुआत, प्रासंगिकता और महत्व जो मानव विज्ञान को 'फील्ड साइंस' बनाता है। इस इकाई का मुख्य उद्देश्य उन कारणों का पता लगाना होगा कि मानव विज्ञान को एक फील्ड साइंस के रूप में कैसे जाना जाता है, साथ ही मानव विज्ञान में सूचना दाताओं के साथ सीधे संपर्क के माध्यम से प्राथमिक जानकारी एकत्र करने की परंपरा और वर्तमान दुनिया में क्षेत्रीय कार्य के

* **योगदानकर्ता**–डॉ. रुखशाना जमान,सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान संकाय सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली । **अनुवाद**– डॉ. चित्रलेखा अंशु, फ्रीलांसर, दिल्ली.

महत्व और प्रासंगिकता का पता लगाना होगा। आप बीएएनसी 102 की इकाई 11 भी पढ़ सकते हैं जो क्षेत्रीय कार्य परंपराओं से संबंधित है।

4.1 आर्म–चेयर मानव वैज्ञानिक और डेटा संकलन

जैसा कि आप अब तक महसूस कर चुके हैं कि मानव की जिज्ञासा यह जानने के लिए विकसित हुई है कि तत्काल सीमा से परे क्या है? एक विषय अनुशासन के रूप में मानव विज्ञान यूरोप और अमेरिका में उत्पन्न हुआ जिसे हम 18 वीं शताब्दी की शुरुआत में पश्चिमी दुनिया के रूप में संदर्भित करते हैं। उस समय के दौरान, मानव जिज्ञासा ने दूरी को पार करने और गैर–पश्चिमी दुनिया के बारे में और अधिक जानने के लिए यात्राओं की शुरुआत की। इस सीमा को मूल रूप से यात्रियों, मिशनरियों, व्यापारियों, सेना के कर्मियों, प्रशासकों आदि द्वारा पार किया गया था। इन लोगों ने अपनी यात्रा और वहाँ के लोगों के साथ बातचीत की कहानियों को वापस लाया जो संस्कृति और समाज के मामले में काफी अलग थे। ये कहानियां मानवविज्ञान के प्रारंभिक युग के दौरान मानववैज्ञानिक के लिए डेटा के काम आई। डेटा के स्रोत को कभी प्रमाणित नहीं किया गया जिसके कारण मानववैज्ञानिक ने बहुत अधिक कल्पना करते हुए लोगों के जीवन को तार्किक रूप से समझने की कोशिश की। ऐसे मानववैज्ञानिक जो कभी अध्ययन क्षेत्र नहीं गए या अध्ययन के तहत आने वाले लोगों के साथ कभी संपर्क में नहीं आए जिन्हें मानववैज्ञानिकों की बाद की पीढ़ियों द्वारा 'आर्म–चेयर एन्थ्रोपोलॉजिस्ट' के रूप में जाना गया था जिन्होंने पहली बार डेटा संग्रह की शुरुआत की थी।

प्रत्यक्ष(फस्ट हैंड) डेटा संग्रह के लिए सूचनादाताओं के साथ सीधे संपर्क किया जाता है। इस प्रकार आर्म–चेयर एन्थ्रोपोलॉजिस्ट और अकुशल व्यक्ति द्वारा एकत्रित किए गए के कामों की आलोचना की गई जो कि "पक्षपाती, अतिरंजित और पूर्वाग्रहित जानकारी के हिस्से थे। अक्सर उनका उद्देश्य पश्चिमी दुनिया को गैर–पश्चिमी लोगों की विचित्र और अजीबोगरीब प्रथाओं के अस्तित्व से अचंभित करना था "(श्रीवास्तव, 2020: 148) जैसा कि श्रीवास्तव ने ठीक ही कहा है, आर्म–चेयर एन्थ्रोपोलॉजिस्टो ने द्वितीय स्रोतों के माध्यम से एकत्र की गई जानकारी उन लोगों की कहानियों को अधिक विकृत थी जो उनके जीवन के तरीके की विस्तृत व्याख्या के बजाय पश्चिमी दुनिया को अचंभित कर देने के लिए 'एक्जोटिक अदर' की कमी से बनी थी। ऐसा लग रहा था जैसे इस कार्य को साथी पुरुषों के साथ एक कॉफी टेबल पर चर्चा करना अधिक उपयुक्त समझा गया। लोगों के साथ प्रथम स्रोत के संपर्क की कमी और डेटा की गैर–मान्यता आर्म–चेयर एन्थ्रोपोलॉजिस्ट के लिए व्यर्थ साबित हुई। यह बाद के वर्षों में कठोर आलोचनाओं का कारण बन गया, क्योंकि मानव विज्ञान धीरे–धीरे एक क्षेत्र विज्ञान के रूप में मज़बूती के साथ बढ़ता गया। सर जेम्स फ्रेज़र का काम गोल्डन बॉउ जो 1890 में दो खंडों में प्रकाशित हुआ था, 1905 में तीन खंडों और 1906–1915 में बारह संस्करणों में एक आर्म–चेयर मानव वैज्ञानिक के काम को दर्शाता है जो कभी भी सीधे तौर पर क्षेत्रकार्य के लिए नहीं गए थे।

अपनी प्रगति जांचें 1

1) "आर्म–चेयर एंथ्रोपोलॉजिस्ट ने प्रत्यक्ष डेटा एकत्र किया"। यह बताएं कि निम्नलिखित कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

.....

.....

2) आर्म–चेयर एंथ्रोपोलॉजिस्ट के लिए डेटा के स्रोत क्या थे?

.....

.....

.....

.....

.....

3) गोल्डन बॉउ किसने लिखा?

.....

.....

.....

.....

.....

4.2 क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) की शुरूआत

जैसा कि हम कहते हैं कि 'रोम एक दिन में नहीं बनाया गया था' वैसी ही स्थिति व्यवस्थित और संगठित मानवशास्त्रीय क्षेत्र का है। एक अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान को 'फील्ड साइंस' के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रयास से गुजरना पड़ा। हर्बर्ट स्पेन्सर के काम सोशल स्टैटिक्स, 1851: 63 में विकास शब्द का उपयोग 'प्रगति' को समझाने के लिए किया गया था, जिसने मानवशास्त्रीयों ने समाज के विकास पर काम करने के लिए निर्धारित किया। यह काम चार्ल्स डार्विन की ऑन द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज़, 1859, (कार्नेइरो, 2003: 3) के प्रकाशन से बहुत पहले प्रकाशित हुआ था, जो अन्य विषयों के लिए विकास की अवधारणा को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु था। इस प्रकार, मानव विज्ञान के अध्ययनों में मुख्य रूप से समाजों, संस्थाओं और उनके रूपों के विकास से संबंधित विकासवादी दृष्टिकोण सामने आया कि कैसे समाज बर्बरता की ओर चला गया तथा शिकार करते हुए अंत में सभ्यता के चरण तक पहुंचा। इस तरह के डेटा की जानकारी मुख्य रूप से उनके तरफ से आयी जो डेटा एकत्रित करते थे। यह कहना गलत होगा कि इस क्षेत्र में शास्त्रीय मानवविज्ञानी क्षेत्र से बाहर नहीं गए थे। फील्डवर्क करने के लिए प्रयास किए

गए, हालांकि, ये शौकिया प्रयास थे और उन्होंने समुदायों और समाजों का अध्ययन करने की तुलना में डेटा एकत्रित करने वाले यात्री और ऐतिहासिक मान्यताओं पर अधिक भरोसा किया।

एडवर्ड बर्नेट टायलर (1832–1917) एक ब्रिटिश मानवविज्ञानी और मानव विकास (विकासवाद) के सिद्धांत के पैरोकार ने अपने क्षेत्र अभियान में एक शौकिया पुरातत्वविद् को 1818 के मध्य में मैक्सिको में सहायता की। 1861 में, टाइलर ने इस फील्डवर्क के आधार पर अपना पहला काम अनाहुआक, या मेक्सिको एंड मैक्सिकन, प्राचीन और आधुनिक प्रकाशित किया। टायलर को अपने काम प्रिमिटव कल्चर (1891) में संस्कृति की सबसे प्रसिद्ध परिभाषा में से एक मानव विज्ञान की दुनिया को देने के लिए गिना जाता है। हालांकि काम द्वितीय स्रोतों के माध्यम से एकत्रित की गई जानकारी पर आधारित था। लुईस हेनरी मॉर्गन (1818–1881), एक अमेरिकी मानवविज्ञानी ने विकासवाद और टायलर के समकालीन सिद्धांत पर काम किया और हमें नातेदारी और सामाजिक संरचना की अवधारणा दी। उन्होंने अपने कानूनी मामलों पर काम करते हुए, इरॉक्विस के बीच काम किया, जो व्यावहारिक रूप से उनके घर के पीछे रह रहे थे, और 1851 में लीग ऑफ द इरॉक्विस नामक पुस्तक में अपने निष्कर्ष प्रकाशित किए। मॉर्गन पेशे से वकील, बाद में कई अन्य उत्तरी अमेरिकी जनजातियों और उनके नातेदारी प्रणालियों के बीच क्षेत्र अध्ययन किया। अपने निष्कर्षों के आधार पर मॉर्गन ने सबसे पहले यह प्रस्तावित किया था कि शुरुआती घरेलू संस्थान मातृसत्तात्मक कुलों से थे न कि पितृसत्तात्मक परिवार से। मानवविज्ञान पर मॉर्गन का काम मानवशास्त्रीय दायरे के क्षेत्र में नातेदारी अध्ययन पर टिका है, जिसे बाद में समाजशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों द्वारा अपना लिया गया।

मानवविज्ञान के अनुशासन के भीतर फील्डवर्क की गणना प्रसिद्ध कैंब्रिज एंथ्रोपोलॉजिकल अभियान के साथ प्रशांत, ऑस्ट्रेलिया में टोरेस स्ट्रेट द्वीप समूह के लिए हुई, जो 1898 में न्यू गिनी और बोर्नियो तक गई थी। टीम का नेतृत्व अल्फ्रेड कॉर्ट हैडॉन (1855–1940) जिन्होंने एक जीवविज्ञानी के रूप में अपना करियर शुरू किया और अंत में मानवविज्ञान और मानवजाति विज्ञान की ओर बढ़े , डब्लू एचआर रिवर्स(1864–1922), विलियम मैकडॉगल, सी.एस. मायर्स, सिडनी एच रे, एंथोनी विल्किन और सी.जी सेलिगमैन ने भी किया। अभियान का उद्देश्य समाजों और उनके विश्वास संरचनाओं को दर्ज करना था। इस क्षेत्र अभियान को संगीत और गीत, फोटोग्राफी और फिल्मांकन के संदर्भ में ऑडियो डेटा की रिकॉर्डिंग के लिए जाना जाता है। हैप्टिक सिनेमैटोग्राफी में हैडॉन का योगदान इस अभियान से निकलता है जिसने मानवविज्ञान में एक छाप छोड़ी है। विलियम हेल्स रिवर्स ने एक चिकित्सक के रूप में प्रशिक्षण लिया बाद मे मनोविज्ञानी बने और अंत में टोरेस स्ट्रेट अभियान के साथ मानव विज्ञान के साथ जुड़ गये। बाद में उन्होंने दक्षिणी भारत के टोडों का अध्ययन किया। उनके काम ने मानवविज्ञान को वंशावली पद्धति प्रदान की, जो आज भी मानव विज्ञानियों की वर्तमान पीढ़ियों द्वारा परिलक्षित होती है।

फ्रांज बोआस (1858–1942) ने एक अमेरिकी मानवविज्ञानी के रूप में उसी समय के आसपास 1883 में बाफिन द्वीप, कनाडा के इनुइट के बीच अपना पहला फील्डवर्क किया था। फ्रांज बोआस पहला डेटा संग्रह में अपने मजबूत विश्वास के कारण, आर्म चैयर मानवविज्ञानी द्वारा इस्तेमाल किए गए तरीकों की निंदा और आलोचना दृढ़ता से की। उन्होंने वर्तमान अर्थ 'यहां और अब' में अपनी प्रासंगिकता के लिए एक समाज के

अध्ययन का प्रचार किया। अन्य समाजों के साथ तुलना के आधार पर न्याय करने के बजाय अपने स्वयं के आइना के माध्यम से किसी समाज को देखने की यह अवधारणा सांस्कृतिक सापेक्षवाद के रूप में जानी जाती है। फ्रांज बोआस ने समाज की संस्कृति को उसके वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता से समझने पर जोर दिया और इस तरह इतिहास को फिर से संगठित किया। उन्होंने कहा कि संस्कृतियों को एक पैमाने पर स्थान नहीं दिया जा सकता है, और एक समाज के दूसरे से बेहतर या कमतर होने की वस्तुनिष्ठ धारणा के विचार का पुरजोर विरोध किया। बोआस ने तर्क दिया कि इतिहास के साथ–साथ समाज के वृद्धि और विकास के लिए इसकी व्याख्या और उसे पूरा करने के लिए इसकी वर्तमान प्रासंगिकता की जांच की जानी चाहिए। बोआस ने तर्क दिया कि ऐतिहासिक विशिष्टता ने शास्त्रीय मानवविज्ञानियों (हयात 990:43) द्वारा उपयोग की जा रही तुलनात्मक विधि के सामान्यीकरण की तुलना में बहुत अधिक सटीकता के साथ विचारों के विकास को ध्यान में रखा। बोआस ने इस बात पर बल दिया कि संस्कृति का अध्ययन करते समय पुरातात्विक, शारीरिक, सांस्कृतिक और भाषाई पहलुओं को एक साथ ध्यान में रखा जाना चाहिए। वह मानवविज्ञान की सभी चार शाखाओं पर काम करने वाले पहले व्यक्ति थे जो बाद में 20वीं शताब्दी में लोकप्रिय हुए। बोआस एक दूरदर्शी थे जिन्होंने छवियों के साथ भी काम किया। क्वाक्सिस में क्वाक्विटल के शीतकालीन समारोह के अपने अध्ययन के दौरान उन्होंने दृश्य डेटा एकत्र किया और 'द क्वाक्विटल आफ वेनकोवेर' 1909 में प्रकाशित किया इसमें 173 रेखाचित्र और 26 प्लेटें शामिल थीं। मानवशास्त्रीय जांच के लिए फील्डवर्क पर अपनी अंतर्दृष्टि के लिए बोआस को अमेरिकी मानव विज्ञान के पिता के रूप में माना गया था।

अल्फ्रेड रेजिनाल्ड रेडक्लिफ–ब्राउन का अंडमान द्वीप समूह पर काम भी क्षेत्र अध्ययन पर आधारित था। उन्होंने अपने परास्नातक के शोध प्रबंध के लिए क्षेत्र (1906–08) में लगभग दो साल बिताए जो उन्होंने 1910 में प्रस्तुत किए थे। ब्राउन का काम काफी हद तक क्षेत्र में गतिविधियों के रोजमर्रा के कामकाज पर केंद्रित था और उन्होने इसे एक कार्यात्मक दृष्टिकोण से देखा। हालांकि, डब्लू एचआर रिवर्स के एक छात्र के रूप में उन्होने भी सांस्कृतिक लक्षण के प्रसार के पहलुओं पर गौर किया । यद्यपि उनका काम अकादमिक दुनिया में फील्डवर्क के मामले में कोई छाप नहीं छोड़ सका, फिर भी उन्होंने एक समाज को समझने में फील्डवर्क के महत्व को दिखाया।

मानवविज्ञान में एक विधि के रूप में फील्डवर्क की गणना ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की (1884–1942) को दी जाती है। एक पोलिश मानवविज्ञानी मालिनोवस्की ने सी.जी सेलिगमैन के संरक्षण में ब्रिटेन में सामाजिक मानवविज्ञान का अध्ययन किया। वह ट्रोब्रिएंड द्वीप में किए गए अपने गहन फील्डवर्क के लिए जाने जाते है। उन्होंने गाँव के मध्य में अपना तम्बू लगाया और अगस्त 1914–मार्च 1915 से लगभग इकतीस महीने तक लोगों के बीच में रहे, फिर मई 1915– मई 1916 और अंत में अक्टूबर 1917 से अक्टूबर 1918 तक। मालिनोवस्की ने क्षेत्र में विस्तारित रहने की नींव रखी। मालिनोवस्की ने न केवल क्षेत्र में अपने लंबे समय तक रहने के साथ एक बेंच मार्क स्थापित किया, बल्कि मुखबिरों के साथ संवाद करने के लिए स्थानीय भाषा के उपयोग के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने लोगों से संवाद करने के लिए भाषा सीखी और समुदाय का हिस्सा बनने के लिए अध्ययन के तहत लोगों की दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों में भाग लिया। स्थानीय भाषा में संवाद करने और समुदाय की रोजमर्रा की गतिविधियों में भाग लेने से उस क्षेत्र की स्थिति की समझ

बनाने में मदद मिली। पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र के अर्गोनॉट्स में, मालिनोवस्की ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है कि मानवशास्त्रीय जांच का उद्देश्य मूल दृष्टिकोण को समझना है, जीवन के लिए उसके संबंध, उसकी दुनिया के बारे में उसकी दृष्टि का एहसास करना'(1922: 25)। मानवविज्ञानी की भूमिका एक एटिक (बाहरी व्यक्ति) के बजाय एक एमिक (इनसाइडर) पेश करने की है, क्योंकि मलिनोवस्की ने शोधकर्ता ने भाग लेने के माध्यम से पहले सूचनादाताओं के जीवन का अनुभव किया। उनके काम ने तालमेल के निर्माण के महत्व को भी निर्देशित किया, कैसे एक शोधकर्ता उत्तरदाताओं के बीच साझा करने और विश्वास हासिल करने के माध्यम से समुदाय में प्रवेश कर सकता है। मालिनोव्स्की के काम से तीन परिसरों को मानवविज्ञानी क्षेत्र को मजबूत करने के लिए काम किया गया था, जो आज इसकी पहचान है: **क.** क्षेत्र में लंबे समय तक रहना **ख.** मूल भाषा में संवाद और **ग.** प्रतिभागी अवलोकन।

अपने काम में मालिनोवस्की ने पश्चिमी प्रशांत के अर्गोनॉट्स में कहा था कि "एक को अन्य गोरे लोगों की कंपनी से खुद को दूर करना होगा, ... अपने गांवों में सही शिविर लगाना चाहिए" (मालिनोवस्की, 1922: 6)। यह कथन मानता है कि फील्डवर्क पुरुषों का विशेषाधिकार था, जहां महिलाओं के लिए जगह नहीं थी। हालाँकि, महिलाओं ने मैदान में प्रवेश किया और प्रथम विश्व युद्ध से पहले काम कर रही हैं, एल्सी क्लीव पार्सन्स उस समय की कुछ महिलाओं में से एक हैं जिन्होंने 1910 में अमेरिकी दक्षिण–पश्चिम में फील्डवर्क किया था। यह धीरे–धीरे आयोजित किया गया कि महिलाओं की अधिक पहुंच है महिलाओं के उत्तरदाताओं का जीवन, एक बिंदु जो 19 वीं शताब्दी में ईबी टाइलर ने खुद की वकालत की थी, जिन्होंने सुझाव दिया था कि पत्नियों को अपने पति को फील्डवर्क के लिए ऐसे क्षेत्रों में (विश्वेश्वरन, 1997) सहायता करनी चाहिए। बोआस ने भी इस भावना की वकालत की क्योंकि उनका मानना था कि "महिलाओं के पास सामाजिक जीवन के क्षेत्रों तक पहुंच थी जो पुरुषों के पास नहीं थी; उन्होंने महिलाओं को पारस्परिक संबंधों में अधिक सहज और कुशल माना और उनसे जीवन के भावनात्मक अभिव्यंजक पक्षों पर डेटा एकत्र करने का आग्रह किया "(मोडेल, 1984: 181)। एक विरासत जो बोआस के छात्रों, रूथ बेनेडिक्ट, मार्गरेट मीड, कोरा डू बोइस आदि द्वारा आगे बढ़ाई गई, जो सभी महिलाएं 1920 और 30 के दशक में अपना फील्डवर्क करती थीं और अपने समय की प्रमुख मानव विज्ञानी बन गईं। सामोआ में मीड का काम आने वाले समय के लिए एक सफलता थी। उनका काम उस संस्कृति को दर्शाता है जिनमें किशोरों पर प्रभाव पड़ता है और उनके बड़े होने में समाज की क्या भूमिका होती है। 1940 के दशक में मैरी डगलस को अनुष्ठान शुद्धता और अशुद्धता और प्रतीकवाद पर कांगो में अपने फील्डवर्क के लिए गिना जाता था। ट्रोब्रिएंड आइलैंडर्स पर एनेट वेनर का काम काफी उल्लेखनीय है क्योंकि वह महिलाओं की भूमिका और अर्थव्यवस्था में योगदान को सामने लाती है जो मालिनोवस्की के काम में व्यापक रूप से गायब थी। लीला दुबे का काम महिलाओं और नातेदारी 'के बीच संबंधों को प्रकाश में लाने के लिए अनुशंसित है, क्योंकि इसने महिलाओं के दृष्टिकोण को पितृसत्तात्मक समाज में प्रस्तुत किया है। अपने शोध के माध्यम से महिला मानवविज्ञानी नारीवाद और कामुकता की धारणाओं को सामने लाने में सक्षम रहे हैं जिन्होंने मानवशास्त्रीय अध्ययनों को एक नए दायरे में ला दिया है।

3) हर्बर्ट स्पेंसर ने अपने काम में सोशल स्टैटिक्स शब्द का इस्तेमाल किया। यह बताएं कि निम्नलिखित कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

.....

.....

4) फ्रांज बोआस ने फील्डवर्क करते समय सांस्कृतिक सापेक्षवाद पर जोर दिया। यह बताएं कि निम्नलिखित कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

.....

.....

5) मार्गरेट मीड ने फील्डवर्क नहीं किया। यह बताएं कि निम्नलिखित कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

.....

.....

4.3 मानव विज्ञान में क्षेत्रकार्य की प्रासंगिकता

मानवविज्ञान आज कई मायनों में 'क्षेत्र में जाने' और लेखन संस्कृतियों/नृवंशविज्ञान' का पर्याय मात्र बन गया है। प्राधिकरण और बयानबाजी कई क्षेत्रों में फैल गई, जहां 'संस्कृति' वर्तमान युग में विवरण और समालोचना (क्लिफर्ड 1984: 3) की एक नई समस्याग्रस्त वस्तु बन गई है। नृवंशविज्ञान, जो एक विधि के रूप में, फील्डवर्क से उपजा है, अब न केवल सामाजिक विज्ञान बल्कि प्राकृतिक और जैविक विज्ञान द्वारा भी व्यापक रूप से लिया जा रहा है। फ़ील्डवर्क का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह एक प्राकृतिक रूप में आयोजित किया जाता है, डेटा को पहले एक शोधकर्ता द्वारा एकत्र किया जाता है जो सूचनादाताओं के साथ लगातार संपर्क में रहता है, ज्यादातर बार स्थानीय भाषा बोलने और प्रतिभागी अवलोकन के माध्यम से। "नृविज्ञान प्रकृतिवादी व्यापार है: आप बैठते हैं और देखते हैं और प्राकृतिक रूप में प्रजातियों से सीखते हैं" (लूहमन 1989:15)।

इस प्रकार एकत्र की गई जानकारी उन विचारों पर प्रतिबिंबित करती है जो किसी घटना या घटना का पहला विवरण देते हैं जो इसे अंदरूनी दृष्टि (एमिक) बनाते हैं। यह एमिक दृष्टि फ़ील्डवर्क के माध्यम से एकत्र किए गए डेटा को प्रमाणीकरण देता है। यह एक विधि है जो; 'लोग क्या सोचते हैं', 'लोग क्या कहते हैं', 'लोग क्या करते हैं', और 'लोग क्या कहते है' में अंतर बताता है (श्रीवास्तव 2004: 11 और 2020: 149)। कई बार लोग इस तरह से जवाब देते हैं जैसे उन्हें लगता है कि यह सही है और सामाजिक रूप से स्वीकार्य है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति कह सकता है कि हमें खाने के दौरान चम्मच का उपयोग करने की आवश्यकता है, हालांकि, जमीनी वास्तविकता यह हो सकती है कि व्यक्ति खाने के दौरान अपनी उंगलियों का उपयोग करता है। एक शोधकर्ता क्षेत्र में रहकर और सूचनादाताओं के साथ काम करते हुए, उनके व्यवहार को स्पस्ट रूप से समझ जाते हैं कि लोग को क्या कहते हैं और वास्तव में वे क्या करते हैं। वास्तविकता केवल तभी सामने आती है जब एक शोधकर्ता जीवन के वास्तविक तरीके की जांच, सत्यापन और व्याख्या करने के लिए सूचनादाताओं के निकट संपर्क में होते है जो शायद 'आदर्श' से काफी अलग होता है या जो जीवन जीने के आदर्श तरीके के बारे में सोचता है।

अपनी प्रगति जांचें 3

7) "नृवंशविज्ञान(एथनोग्राफी) आंतरिक दृष्टिकोण पर आधारित है"। यह बताएं कि क्या निम्नलिखित कथन सही है या गलत है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8) मानवविज्ञान में फील्डवर्क का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

4.4 एक्कीसवीं सदी में क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क)

अब तक शिक्षार्थियों को काफी हद तक पता है कि मानव विज्ञान में चार मुख्य शाखाएं हैं। इन शाखाओं में से प्रत्येक का सार फ़ील्डवर्क में निहित है। यहाँ, जो सवाल उठता है; "यदि 'फ़ील्ड' सभी के लिए समान है" तो आइए एक पल के लिए सोचें कि क्या भौतिक, सामाजिक, भाषाई और पुरातात्विक मानवविज्ञानी डेटा संग्रह के लिए एक ही क्षेत्र में जाएंगे। हम तर्क दे सकते हैं कि भौतिक, सामाजिक और भाषाई

मानवविज्ञानी के संदर्भ में फील्डवर्क के लिए स्थान समान होगा, क्योंकि ये शाखाएं मानव उत्पत्ति, भिन्नता, व्यवहार और संस्कृति से संबंधित हैं, हालांकि, डेटा संग्रह के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरण और तकनीक अलग–अलग होंगे। प्रस्थान का बिंदु पुरातात्विक मानवविज्ञानियों के लिए आता है क्योंकि उनके लिए मनुष्यों के साथ कोई सीधा संवाद नहीं है। तो आखिर वे करते क्या हैं? पुरातात्विक मानवविज्ञानी अतीत के जीवन के पुनर्निर्माण के लिए भौतिक संस्कृति में पाए जाने वाले संस्मरणों के गहन अध्ययन के माध्यम से मानव कहानी बनाते है। इस प्रकार, पुरातात्विक फील्डवर्क जीवित मानव सूचनादाताओं के बिना होता है।

इस जंक्शन(संधि–स्थल)पर शिक्षार्थी अपने पहले के अध्ययनों (BANC-102 कोर्स की इकाई 11)को याद कर सकते हैं कि आज फील्डवर्क केवल एक अभियान के स्थान पर दूर जाने या 'मूल निवासियों के बीच रहने' से जुड़ा नहीं है। क्षेत्र की अवधारणा बहुत ही तेजी से बदल रही है। मानवविज्ञानी, हालांकि मुख्य रूप से कम ज्ञात समाजों के साथ संबंध रखते हैं, वे भी विकसित और विकासशील समाजों को ध्यान में रखते हैं। फील्ड आज एक संस्था, एक संगठन हो सकता है जिसमें मानवविज्ञानी का ध्यान कॉर्पोरेट, व्यावसायिक जीवन, बाजार के रुझान आदि पर केंद्रित है। मीडिया, प्रदर्शन कला, फिल्में सभी मानवविज्ञानी के लिए रुचि के क्षेत्र हैं। स्वास्थ्य और कल्याण, बीमारियों की उत्पत्ति, पिछली संस्कृतियों के अवशेषों पर भौतिक और नस्लीय–पुरातत्वविदों द्वारा शोध किया जा रहा है। फील्ड या तो ग्रामीण या शहरी स्थान हो सकता है। मानवशास्त्रीय फील्डवर्क आज न केवल अन्य 'के अध्ययन से संबंधित है, बल्कि मानवविज्ञानी के रूप में 'स्व'भी अब ऑटो–एथनोग्राफी कथाओं के माध्यम से अपने जीवित अनुभवों के बारे में लिख रहे हैं। इस प्रकार, मानवविज्ञानी आज भी अपने लोगों के बीच काम कर रहे हैं। आभासी मानवविज्ञानी के बीच भी ध्यान केंद्रित किया गया है, मानव अब अपनी गतिविधियों का अधिकांश भाग ऑनलाइन दे रहे हैं। आभासी दुनिया इस प्रकार मानवविज्ञानी के लिए एक क्षेत्र बन गई है कि पहले के समय में फील्डवर्क किसी विशेष साइट या स्थान पर अनुसंधान करने से संबंधित था। आज फील्डवर्क बहु–पक्षीय भी हो सकता है। बहु–पक्षीय फ़ील्डवर्क में शोधकर्ता एक से अधिक साइट में फ़ील्डवर्क करता है जहां विषयों की समान श्रेणियां मिल सकती हैं। इस प्रकार, मानव गतिविधियों के साथ कोई भी स्थान आज मानवविज्ञानी के लिए एक संभावित क्षेत्र हो सकता है– चाहे वह आभासी क्षेत्र हो या भौगोलिक क्षेत्र।

तीसरी सहस्राब्दी की शुरुआत, वर्ष 2020 हमारे जीवन में एक नया चरण लेकर आया। कोविड–19 महामारी ने एक असामान्य स्थिति दिखाई जिसने दुनिया भर में रोजमर्रा की सामान्य जिंदगी को पूरी तरह से रोका दिया। लॉकडाउन की घोषणा के साथ ही मनुष्य अपने घरों तक ही सीमित रहा और सामाजिक दुरी का भी पालन किया। यह एक ऐसा समय था जब बहुत से लोगों ने मानवशास्त्रीय दुनिया में क्षेत्र की परंपरा का अंत देखा। हालांकि, दुनिया भर में मानव विज्ञानियों ने अपने घरों और जीवन को कार्यक्षेत्र में बदल दिया। 'अन्य' से मानवशास्त्रीय टकटकी पूरी तरह से 'स्व' में बदल गई थी। एक परिवार का अध्ययन; बातचीत, व्यवहार, दिन–प्रतिदिन की जीवन शैली बन गया। कई लोगों ने आभासी दुनिया की ओर रुख किया और इन स्थानों पर काम किया, इस तरह असामान्य परिस्थितियों में फील्डवर्क परंपरा को बनाए रखा। जिसके बाद यह शोध का एक वैद्य तरीका बन गया क्योंकि कोविड 19 के प्रतिबंध अब भी जारी है।

अपनी प्रगति जांचें 4

9) कुछ स्थानों का सुझाव दें जहां मानवशास्त्रीय क्षेत्रकार्य किया जा सकता है ।

.....

.....

.....

.....

.....

10) "आभासी दुनिया(वर्चुअल वर्ल्ड) फील्डवर्क के लिए स्थान नहीं है "" । यह बताएं कि निम्नलिखित कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

.....

.....

11) कोविड–19 महामारी और लॉकडाउन अवधि के दौरान कोई फील्डवर्क नहीं किया गया। बताएं कि यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 क्षेत्रकार्य में नैतिकता

आइए हम उदाहरण के साथ यह समझने की कोशिश करें कि नैतिकता का क्या अर्थ है। अगर आप गली में घूम रहे हैं और आपको सौ रुपये का नोट मिल जाता है, तो आप क्या करेंगे? कहें कि आप इसे उठाकर अपनी जेब में रख लेंते हैं। क्या यह नैतिक रूप से सही होगा? इसमें कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि आपके लिए जो नहीं है, उसे लेना नैतिक नहीं है, दूसरी ओर कुछ लोग 'खोजकर्ता' कीपर का तर्क दे सकते हैं, जिसका अर्थ है कि आप वही रखते हैं जो आप पाते हैं। इस प्रकार, नैतिक चिंताएं भी भिन्न हो सकती हैं, जो एक समुदाय के लिए नैतिक रूप से सही है, दूसरे के लिए ऐसा नहीं हो सकता है। नैतिकता मूल रूप से नैतिक सिद्धांत हैं जो किसी गतिविधि को करते समय किसी व्यक्ति के स्वयं और दूसरों के प्रति व्यवहार को नियंत्रित करता है।

मानवविज्ञान के फील्डवर्क में मनुष्यों के साथ बातचीत शामिल होती है, जहां कई बार शोधकर्ता को संवेदनशील डेटा या जानकारी से निपटना पड़ता है। एक शोधकर्ता को

क्षेत्र में नैतिक चिंताओं के कारण दुविधाओं का सामना करना पड़ सकता है। इस प्रकार नैतिक मुद्दे मानवविज्ञान क्षेत्र में एक प्रमुख चिंता का विषय है। समस्या लिखित रिपोर्ट या शोध प्रबंध के रूप में डेटा की प्रस्तुति तक विषय के चयन के साथ शुरू हो सकती है। वह प्रारूप जिसमें डेटा एकत्र किया जाता है, अनुपालन और पुनः प्रस्तुत किया जाता है, अपने आप में नैतिक चिंताओं को जन्म दे सकता है। उदाहरण के लिए, आज एक तस्वीर क्लिक करते समय यह एक नैतिक मुद्दे को भी जन्म दे सकता है कि इसमें शामिल व्यक्ति की सहमति ली गई थी या नहीं। फ़ील्डवर्क जानकारी इकट्ठा करने के लिए एक शोधकर्ता के तरीके का एक हिस्सा है और यह फील्डवर्क है जो एक तरह से लोगों के जीवन में घुसपैठ करता है। इस प्रकार, एक शोधकर्ता को बहुत मेहनती होना पड़ता है कि कैसे डेटा एकत्र किया जाता है और प्रसारित किया जाता है।

क्षेत्र में शोधकर्ता को डेटा संग्रह से संबंधित चार बुनियादी विशेषताओं को ध्यान में रखना चाहिएः अ). संवेदनशील मुद्दों की गोपनीयता जिसे संरक्षित करने की आवश्यकता है; ब). डेटा संग्रह पर शुरू करने से पहले अध्ययन के तहत लोगों की सहमति; ग). उपयोगिता बड़े पैमाने पर समुदाय और समाज की बेहतरी के लिए डेटा के उपयोग की चिंता करती है; और घ.) ज्ञान और उसका संचरण जिसमें डेटा के प्रामाणिकता को बनाए रखते हुए अपने स्वदेशी ज्ञान के पेटेंट के रूप में अध्ययन के तहत समुदाय के अधिकार। (श्रीवास्तव, 2020: 155)। अनुसंधान में नैतिकता के बारे में विस्तृत जानकारी इकाई 8 में पढ़ी जा सकती है।

अपनी प्रगति जांचें 5

12) "क्षेत्र में मानवविज्ञानी सहमति के बिना तस्वीरें क्लिक कर सकते हैं" यह बताएं कि क्या निम्नलिखित कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

.....

.....

13) नैतिकता का अर्थ क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

4.6 सारांश

इस इकाई में हमने मानवविज्ञान में फील्डवर्क के इतिहास को शिक्षार्थियों से परिचित कराने का प्रयास किया है। कैसे फील्डवर्क अध्ययन लोगों की प्रत्यक्ष जानकारी एकत्र

करने के लिए एक विधि के रूप में उभरा। मानवशास्त्र की शुरुआत का पता लगाने के लिए हमने दूर–दराज के स्थानों से लोगों के जीवन का पुनर्निर्माण आर्म–चेयर मानवविज्ञानी द्वारा यात्रियों, मिशनरियों और प्रशासकों के डेटा के संकलन के आधार पर किया। इसने मानवविज्ञानी की अगली पीढ़ी को रास्ता दिया, जिन्होंने एक द्वितीय स्रोत से डेटा एकत्र करने के लिए आर्म–चेयर मानवविज्ञानी के व्यवहार की निंदा की। उन्होंने फर्स्टहैंड जानकारी इकट्ठा करने के लिए उद्यम किया और इस तरह, क्षेत्र में जाने की परंपरा शुरू की। फील्डवर्क के सिद्धांत जिन्होंने मानवविज्ञान के अभिन्न अंग के रूप में फील्डवर्क स्थापित करने की दिशा में काम किया है जो इस इकाई में विस्तार से बताया गया है। फील्डवर्क जैसा कि हम आज समझते हैं को एक कठोर प्रक्रिया से गुजरना पड़ा था, यह कई प्रारंभिक मानवविज्ञानी के प्रयासों, ट्रेल्स और त्रुटियों के माध्यम से हुआ कि आज हम इसे मानवविज्ञान की पहचान के रूप में स्थापित करने में सक्षम हुए हैं। मार्गरेट मीड्स (1964: 5) के अनुसार, 'हमारे पास अभी भी मानवविज्ञानी बनाने का कोई रास्ता नहीं है सिवाय इसके कि उसे क्षेत्र में भेजा जाए: जीवित सामग्री के साथ यह संपर्क हमारा विशिष्ट चिह्न है '। मानवविज्ञान के एक छात्र के लिए, फील्डवर्क के अनुभव की मात्राओं को मानवविज्ञान के दायरे में प्रवेश करने के लिए लिखते हैं।

4.7 संदर्भ

Carneiro, R. (2003). *Evolutionism in Cultural Anthropology: A Critical History*. USA: Westview Press.

Clifford, J. (1984). 'Introduction: Partial Truths'. In *Writing Culture: The Poetics and Politics of Ethnography*, James Clifford and George E. Marcus (eds.). London: University of California Press

Fontein, J. (2014). 'Doing research: fieldwork practicalities'. In *Doing Anthropological Research*, Natalie Konopinski (ed). London and New York: Routledge. Pp. 70-90

Goode, W. J. and Paul K. Hatt.(1981). *Methods in Social Research*. Tokyo: McGRAW-Hill International Book Company

Hyatt, M. (1990).*Franz Boas, Social Activist - The Dynamics of Ethnicity*. New York: Greenwood Press

Kothari, C. R. (2009). *Research Methodology*.New Delhi: New Age International Publishers

Langness, L. L. (1965).*The Life History in Anthropological Science*. New York: Holt, Rinehart and Winston

Luhrmann, T. M. (1989). *Persuasions of the Witch's Craft: Ritual Magic and Witchcraft in Present-day England.* Oxford: Basil Blackwell

Malinowski, B. (1922). *Argonauts of the Western Pacific: An account of native enterprise and adventure in the Archipelagoes of Melanesian New Guinea*. London: Routledge and Kegan Paul

Mead, M. (1964).*Anthropology: a Human Science*. New York: D. Van Nostrand Co., Inc.

Modell, J. S. (1984). *Ruth Benedict: Patterns of a Life*. Phyladelphia: Univ Of Pennsylvania Press

Morgan, L. H. (1851). *League of theHo-dé-no-sau-nee, or Iroquois*. Rochester, New York: Sage and Brother, Publishers

Srivastava, V. K. (2004). *Methodology and Fieldwork*. New Delhi: Oxford University Press

Srivastava, V.K. (2015). "Writing up Qualitative Research" In *Experiences of Fieldwork and Writing* (305-330) V.K. Srivastava (ed). New Delhi: Serials Publication

Srivastava, V.K. (2020). "Fieldwork Traditions in Anthropology". In *Introduction to Social and Cultural Anthropology*, Unit 11, Block 4, BANC 102, Indira Gandhi National Open University

Tylor, E. B. (1861). *Anahuac: or, Mexico and the Mexicans, Ancient and Modern*. London: Longman, Green, Longman and Roberts

Young. V. P. (1996). *Scientific Social Surveys and Research*. Delhi: Prentice Hall of India

Visweswaran, K. 1997. "Histories of Feminist Ethnographies".*Annual Review of Anthropology*.26: 591- 621.

4.8 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

1) गलत
2) अनुभाग 4.1 देखें।
3) जेम्स फ्रेजर
4) सही
5) सही
6) गलत
7) सही
8) अनुभाग 4.3 देखें।
9) अनुभाग 4.4 देखें
10) गलत
11) गलत
12) गलत
13) अनुभाग 4.5 देखें ।

इकाई 5 शोध प्रारूप (डिजाइन)*

इकाई की रूपरेखा

5.0 परिचय

5.1 शोध प्रारूप की अनिवार्यता

5.2 शोध प्रारूप के प्रकार

5.3 शोध प्रारूप तैयार करने के चरण

5.4 शोध प्रारूप में संबद्ध पहलू

5.5 शोध प्रारूप में डिजिटल प्रौद्योगिकी की भूमिका

5.6 सारांश

5.7 संदर्भ

5.8 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी सक्षम होगें:

- शोध प्रारूप और उसके प्रकारों को परिभाषित करने में;
- एक अच्छा शोध प्रारूप तैयार करने हेतु आवश्यक चरणों का वर्णन करने में;
- आत्मविश्वासपूर्वक संदर्भ/ग्रंथ सूची, पाद–टिप्पणियां/अंत–टिप्पणियां आदि तैयार करने में; तथा
- शोध में डिजिटल तकनीक का सरलता से प्रयोग कर सकने में।

5.0 परिचय

अब तक आप इस पाठ्यक्रम की पिछली इकाइयों से मानवविज्ञान में अनुसंधान के महत्व के बारे में जान चुके हैं और यह भी कि मानवविज्ञान को एक वैध क्षेत्र विज्ञान के रूप में कैसे पहचाना जाता है। किन्तु कोई भी शोध विषय केंद्रित और मौलिक हो इसके लिए हमें कुछ मानदंडों का पालन करना होता है। इससे पहले कि हम शोध करने के लिए किसी विषय का चयन करें एवं शोध कैसे किया जाना है इसके लिए कोई रूपरेखा तैयार करें, हमें इस बारे में पूरी तरह से स्पष्ट होना चाहिए कि शोध से क्या तात्पर्य है।

सरल शब्दों में कहें तो शोध को संसाधनों और सूचनाओं की एक व्यवस्थित और तार्किक जांच के रूप में देखा जा सकता है ताकि हम तथ्यों का पता लगा सकें, निष्कर्ष पर पहुंच सकें और नए परिणामों को समझ सकें। शोध का एक समान रूप से अनिवार्य हिस्सा सार्थक ज्ञान का प्रसार करना है। कोठारी (2004) ने शोध को

***योगदानकर्ता**–डॉ. मीतू दास, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान अनुशासन, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू। **अनुवादक**–डॉ. जे.एन. सिंह, अन्वेषक (एसएस) ग्रेड–I, सामाजिक अध्ययन प्रभाग, ओआरजीआई, गृह मंत्रालय।

"अध्ययन, अवलोकन, तुलना और प्रयोग की मदद से किसी समस्या के समाधान खोजने के उद्देश्य और व्यवस्थित तरीके से ज्ञान एवं विश्वास की खोज" के रूप में परिभाषित किया है।

इसलिए सार्थक शोध करने के लिए तर्कसंगत तरीकों का पालन किया जाना चाहिए। यहीं पर हमें शोध प्रारूप की आवश्यकता होती है। शोध प्रारूप विभिन्न प्रकार का हो सकता है। यह शोध में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक चरण प्रदान करता है, ताकि अनुसंधान को उचित रूप से संचालित किया जा सके। इस पाठ का उद्देश्य आपको सरल किंतु अलग तरीके से शोध प्रारूप से परिचित कराना है, ताकि यह प्रशिक्षण आपमें शोध करने हेतु आवश्यक आत्मविश्वास पैदा कर सके।

अपनी प्रगति जांचें

1) शोध क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

5.1 शोध प्रारूप की अनिवार्यता

शोध प्रारूप, मूल शोध हेतु बनाई गई योजना का एक खाका है। इसमें प्रयोग होने वाली अनुसंधान विधियों, उपकरणों और तकनीकों की संरचना और पृष्ठभूमि भी शामिल है। शोध प्रारूप शोधकर्ता को यह जानने में सहायता करता है कि किसी विशेष समस्या के अध्ययन के लिए किन विधियों का उपयोग करना उचित होगा। स्पष्ट है कि, यह शोध को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। शोध प्रारूप को परिभाषित करने के लिए यह कहा जा सकता है कि इसमें "योजना, संरचना और जांच की रणनीतिक कल्पना की जाती है ताकि शोध प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो सकें और भिन्नता को नियंत्रित किया जा सके"। एक शोध प्रारूप का क्या अर्थ है, इसकी संक्षेप में व्याख्या करने के बाद, आइए अब हम शोध प्रारूप की विशेषताओं पर चर्चा करें। यदि आपका शोध अच्छी तरह से डिजाइन किया गया है, तो अनुसंधान करने और आवश्यक तथ्य एकत्र करने में आपको कम समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

शोध प्रक्रिया का वर्णन करने वाली रूपरेखा के रूप में, शोध प्रारूप में व्यापकता से यह पहलू शामिल हैं कि कौन से तथ्य किस प्रकार एकत्र किए जाने हैं; किन उपकरणों और तकनीकों का उपयोग किया जाना है; और अंततः तथ्य मूल्यांकन कैसे किया जाना है। इस बारे में और अधिक स्पष्ट होने का तरीका यह है कि स्वयं को स्मरण कराया जाय कि शोध का उद्देश्य शोधकर्ता द्वारा निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करना है।

विशेष रूप से, एक अच्छे शोध प्रारूप की मुख्य विशेषताएं निम्न हैं:

1) यह एक खाका है, जो शोध अध्ययन के लक्ष्य और उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से बताता है;

2) यह एक रूपरेखा है, जो शोध में प्रयोग किए जाने वाले संसाधनों और विधियों, उपकरणों और तकनीकों की पहचान करती है;

3) यह एक ऐसा ढांचा है, जो यह सुनिश्चित करता है कि एकत्रित की गई जानकारी या तथ्य निष्पक्ष, सुसंगत, वैध और तर्कसंगत हैं।

4) एक बार जब आप एक अच्छे शोध प्रारूप की विशेषताओं के बारे में स्पष्ट हो जाते हैं, तो आपको उस श्रेणी के बारे में पता होना चाहिए, जिसमें आपका शोध आता है। शोध प्रारूप कई प्रकार के होते हैं, लेकिन यह तय करने से पहले कि आपकी शोध योजना को इनमें किस प्रकार फिट किया जाए, हमें पहले यह समझना चाहिए कि यह मोटे तौर पर किस श्रेणी में आएगा।

अपनी प्रगति जांचें

2) शोध प्रारूप को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) एक अच्छे शोध प्रारूप की मुख्य विशेषताएं क्या हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

5.2 शोध प्रारूप के प्रकार

मोटे तौर पर, शोध प्रारूप को मौलिक रूप से गुणात्मक और मात्रात्मक शोध में विभाजित किया गया है।

आइए पहले यह जानने का प्रयास करें कि गुणात्मक शोध क्या है।

i) गुणात्मक शोध : यह अपने चरित्र में व्याख्यात्मक होता है, यह किसी आख्यान (नैरेटिव) की भांति आगे बढ़ता है, जो व्यक्ति, समुदाय या संस्कृति का अध्ययन करती है। इसका मात्रात्मक तथ्य से कोई संबंध नहीं है, लेकिन कभी–कभी अध्ययन की गई संस्कृति के बारे में सामान्य सवालों के जवाब देने के लिए इसकी मदद भी ली जाती है। इस प्रकार का शोध पहले यह देखने का प्रयास

करता है कि हमारे आस–पास क्या मौजूद है और यह जिस तरह से मौजूद है, उसका अस्तित्व क्यों है। यह वर्णनात्मक रूप से देखे गए परिवर्तनों को समझने की भी कोशिश करता है। मानव विज्ञान में गुणात्मक शोध करने की एक महत्वपूर्ण विधि प्रेक्षण पद्धति है। गुणात्मक शोध में तालमेल स्थापित करना एक बहुत ही आवश्यक पहलू है और इसमें शोध किया जाने वाला नमूना आकार (सैम्पल साइज) आम तौर पर छोटा होता है।

अपनी प्रगति जांचें

4) गुणात्मक अनुसंधान में नमूना आकार बहुत बड़ा है। बताएं कि यह सही है या गलत।

.....

.....

.....

.....

.....

ii) **मात्रात्मक शोधः** गुणात्मक शोध के विपरीत, मात्रात्मक शोध में अध्ययन सर्वेक्षण और जनगणना की सहायता से किया जाता है। यहां लोगों के आख्यानों और उनके अनुभवों के संग्रह के बजाय, स्पष्ट प्रस्तुतिकरण योग्य तथ्यों की तलाश होती है। जैसे, किसी घर में लोगों की संख्या; या किसी समुदाय में मौजूद परिवारों के प्रकार; या दिल्ली में तेलुगु भाषी लोग आदि। इसलिए यहाँ तथ्य निश्चित संख्याओं पर आधारित हैं, जहाँ व्यक्तियों के वृहद् समूह को अध्ययन के नमूने के रूप में लेने की आवश्यकता होती है। निष्कर्षों की प्राप्ति हेतु इस पद्धति के माध्यम से एकत्र किए गए तथ्यों का विश्लेषण सांख्यिकीय उपकरणों की मदद से किए जा सकते हैं।

अपनी प्रगति जांचें

5) मात्रात्मक तथ्य विश्लेषण हेतु किन उपकरणों का उपयोग किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

इन दो व्यापक प्रकार के शोध प्रारूपों के आधार पर, आइए अब हम विशिष्ट प्रकार के शोध प्रारूप देखें, जिन्हें गुणात्मक या मात्रात्मक शोध प्रारूप के अन्दर ही रखा जा सकता है।

5.2 शोध प्रारूप के प्रकार

एक विशिष्ट प्रकार का शोध प्रारूप योजना के अनुसार शोध करने की न सिर्फ अनुमति देता है बल्कि यह शोध के उद्देश्य की पूर्ति में भी सहायता करता है। यह परिष्कृत, औचित्यपूर्ण और सही परिणामों के निर्माण में सहायता करता है। इसलिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि आप किस प्रकार के शोध प्रारूप का उपयोग करना चाहते हैं। आइए हम यहां कुछ महत्वपूर्ण शोध प्रारूपों को देखें, जो अधिकाँश शोधकर्ताओं द्वारा प्रयोग किए जाते हैं।

क) वर्णनात्मक शोध

इस अनुसंधान में घटना का विस्तृत विवरण देते हुए उसका वर्णन किया जाता है। यदि कोई शोधार्थी अपने अध्ययन में व्याख्यात्मक शोध प्रारूप अपनाता है तो उसे शोध समस्या का बेहतर वर्णन करना होगा। जैसे, यह जानने के लिए कि गरीब और अमीर लोगों के बीच अंतर क्यों है, यह तभी जाना जा सकता है जब वास्तव में ऐसा अंतर मौजूद हो। यदि यह अंतर है तो, वर्णनात्मक अध्ययन इस अंतर को समझने में मदद कर सकता है।

ख) व्याख्यात्मक शोध

यह किसी भी वर्णनात्मक अध्ययन से उत्पन्न होने वाले कारणों का उत्तर देता है। उदाहरण के लिए, पुरुष घरेलू सहायकों की तुलना में महिला घरेलू सहायिकाओं की संख्या ज्यादा होने के कारणों पर व्याख्यात्मक शोध के माध्यम से ही अध्ययन किया जा सकता है।

ग) प्रयोगात्मक प्रारूप

सजीवों पर शोध करने वाले शोधकर्ताओं के लिए प्रायोगिक प्रारूप को लागू करना थोड़ा मुश्किल है। हालाँकि, जहां संभव होता है अथवा अवसर प्राप्त होता है, वहाँ शोधकर्ता प्रयोगात्मक प्रारूप का भी उपयोग करते हैं। यह मूल रूप से दो चरों– एक स्वतंत्र और एक आश्रित चर, का परीक्षण है। इसमें दो ऐसे समूह सम्मिलित होते हैं जिनमें से एक समूह नियंत्रित होता है, यानि, जहां चीजें जस की तस होती हैं, और दूसरा प्रयोगात्मक समूह होता है, जहां परिणाम प्राप्त करने के लिए चीजों को समायोजित किया जाता है। सामाजिक विज्ञान में इस प्रारूप का परीक्षण एक प्रयोगशाला, एक क्षेत्र और प्राकृतिक सामाजिक दुनिया में किया जा सकता है। इस तरह के प्रारूपों में सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है। जिनका उपयोग मुख्य रूप से दोनों समूहों के मध्य अंतर खोजने के लिए किया जाता है।

घ) अनुदैर्ध्य प्रारूप (पैनल डिज़ाइन)

एक अनुदैर्ध्य प्रारूप, जिसे पैनल डिज़ाइन के रूप में भी जाना जाता है, में लंबे समय तक एक ही चयनित चर का अध्ययन शामिल होता है। यह ज्यादातर अवलोकन को अपने अध्ययन की मुख्य विधि के रूप में उपयोग करता है। अनुदैर्ध्य अध्ययन, चरों में बिना कोई हेरफेर किए एक सप्ताह से लेकर दशकों तक लम्बा हो सकता है। जैसे, किसी व्यक्ति के वजन घटाने की पूरी प्रक्रिया

एवं उसमें लगने वाले समय का अध्ययन अवलोकन के माध्यम से इस प्रारूप के अंतर्गत किया जा सकता है। इसी प्रकार कोविड–19 और इसके प्रभावों पर एक अच्छा अनुदैर्ध्य अध्ययन किया जा सकता है।

ङ) क्रॉस सेक्शनल प्रारूप

यह प्रारूप अनुदैर्ध्य प्रारूप के एकदम विपरीत है। इस प्रारूप में एक ही समय में आबादी के विभिन्न नमूनों या "क्रॉस–सेक्शन" का अध्ययन किया जाता है। चूंकि इस तरह के अध्ययन लघु होते हैं इसलिए इन्हें पूरा करना अपेक्षाकृत सस्ता भी होता है। क्रॉस–सेक्शनल प्रारूप वर्णनात्मक अध्ययनों के दायरे में आता है। यह विभिन्न विशेषताओं के बारे में जानने में मदद करता है, जो किसी जनसंख्या में पायी जा सकती हैं और वर्तमान घटनाओं के बारे में सूचित करती हैं। जैसे, इस प्रारूप के माध्यम से समुदाय में घरेलू हिंसा की तीव्रता को दिखाया जा सकता है।

अपनी प्रगति जांचें

6) कौन सा शोध प्रारूप किसी घटना में "क्या" और "कैसे" की व्याख्या करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

7) कौन सा शोध प्रारूप किसी घटना में "क्यों" की व्याख्या करता है?

.....

.....

.....

.....

8) प्रयोगात्मक प्रारूप में किस प्रकार के समूहों का परीक्षण किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

9) रिक्त स्थान भरें:

एक अनुदैर्ध्य प्रारूप को ..... के रूप में भी जाना जाता है।

एक बार जब हम शोध प्रारूप के प्रकारों को समझ लेते हैं तो हम सोच सकते हैं कि एक त्रुटिरहित अनुसंधान योजना बनाने के लिए अनुसंधान को क्रमिक रूप से कैसे डिजाइन किया जाए। आइए आगे देखें कि यह कैसे किया जा सकता है।

5.3 शोध प्रारूप तैयार करने के चरण

शोध प्रारूप के प्रकार पर निर्णय लेने के बाद, मुख्य खाका तैयार करने की आवश्यकता होती है। यह कालानुक्रमिक अध्ययन सूची शोधकर्ता को अध्ययन विषय पर केंद्रित रहने में मदद करती है और किसी भी प्रकार का विचलन नहीं होने देती, जब तक कि कोई ऐसी अप्रत्याशित स्थिति न आ जाए, जिसमें बदलाव आवश्यक ही हो। तो आइए हम प्रत्येक चरण पर एक–एक करके चर्चा करें।

a) एक समस्या का चयन

एक शोध जांच नियोजन हेतु यह आवश्यक है कि शोध करने के लिए कुछ बिंदु तो होना ही चाहिए। यही बिंदु आपकी शोध समस्या है। अपने मानवशास्त्रीय प्रशिक्षण के दौरान, जैसे–जैसे आप आगे बढ़ेंगे, धीरे–धीरे उन क्षेत्रों और मुद्दों में रुचि विकसित होती जाएगी, जिनके बारे में आप सार्थक वार्तालाप करना शुरू कर देंगे, या उनके बारे में प्रश्न तैयार करना शुरू कर देंगे। जब आप अपने मस्तिष्क से उपजे किसी भी प्रासंगिक चिंता पर शोध कर रहे हों, तो इस क्षेत्र में अपने मानवशास्त्रीय कौशल का परीक्षण करने के लिए इस पर प्रयोग कर सकते हैं। हालाँकि समस्या का चयन बेतरतीब ढंग से नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि इस इकाई में अब तक आपने जो चर्चा की है, उससे आपको अपनी समस्या को तर्कसंगत रूप से चुनने और उस पर काम करने में पर्याप्त मदद मिलती है। समस्या, जिसे आम तौर पर शोध विषय के रूप में भी जाना जाता है, को केंद्रित, तर्कसंगत और प्राप्त करने योग्य होना चाहिए। कभी–कभी एक अच्छी तरह चुनी गई समस्या ऐसे निष्कर्ष प्रदान कर सकती हैं, जिनका उपयोग नीति निर्माण में सहायता के उद्देश्य से भी किया जा सकता है। चुनी गई समस्या एक होनी चाहिए, जिसे आसानी से और कुशलता से वर्णित किया जा सके। यह शोध में स्पष्टता बनाए रखने में मदद करता है। शोध समस्या का चयन करते समय जिन मुख्य बातों का ध्यान रखना चाहिए वे हैं: (i) मैं क्या जानना चाहता हूँ ? (ii) मैं इसके बारे में क्यों जानना चाहता हूँ? और मेरे मन में जो प्रश्न हैं उनके उत्तर क्या हो सकते हैं? यदि शुरुआत में ही समस्या कम खामियों वाली और प्रेरक होती है, तो एक अच्छा और ठोस शोध परिणाम प्राप्त होने की संभावना अधिक हो जाती है।

अपनी प्रगति जांचें

10) शोध समस्या का चयन करते समय किन मुख्य बातों का ध्यान रखना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

b) समस्या का विवरण

समस्या का विवरण शोध समस्या की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। यह इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करता है कि वह कौन–सी समस्या है, जिसकी जांच अनुसंधान में की जानी है। समस्या के विवरण का मुख्य उद्देश्य किसी व्यापक मुद्दे को केंद्रित एवं विशिष्ट तरीके से सामने लाना है। समस्या में सावधानीपूर्वक व्यवस्थित अध्ययन के माध्यम से हल किए जाने की क्षमता होनी चाहिए। अतः समस्या का विवरण शोध के उस आशय को स्पष्ट रूप से वर्गीकृत करने में सहायता करता है, जिसे किए जाने की योजना है। इस प्रकार, समस्या के विवरण में निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिए जैसे, i- इसे ज्ञान–प्रसार की रिक्तता को भर सकने योग्य होना चाहिए; ii- यह पहले से मौजूद ज्ञान में नया अर्थ जोड़ने के लिए पर्याप्त मान्य होना चाहिए; iii- इसे नए शोध के लिए अवसर देना चाहिए; iv- तथ्य संग्रह के उचित तरीकों के माध्यम से समस्या पर शोध किया जाना चाहिए; v- यह समय और साधनों के आधार पर समस्या के प्रति शोधकर्ता की रुचि एवं उसकी क्षमताओं को भी प्रदर्शित करने वाला होना चाहिए; और vi- यह दिखना चाहिए कि संबंधित समस्या नैतिकता के दायरे में अध्ययित की गई है।

अपनी प्रगति जांचें

11) समस्या के विवरण को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

12) समस्या के विवरण की विशेषताएं क्या हैं?

.....

.....

.....

c) साहित्यावलोकन (साहित्य समीक्षा)

फ़िंक ने साहित्यावलोकन को कुछ इस तरह परिभाषित किया है, " यह अध्ययित शोध समस्या के संबंध में पुस्तकों, विद्वानों के लेखों, किसी विशेष मुद्दे; अनुसंधान क्षेत्र या सिद्धांतों से संबंधित अन्य स्रोतों का सर्वेक्षण करता है, और ऐसा करने से, इन कार्यों का विवरण, सारांश और महत्वपूर्ण मूल्यांकन प्रदान करता है" (2014).

साहित्य समीक्षा विस्तृत रूप से, क्षेत्र अध्ययन शुरू करने से पहले की जाती है। यह और अधिक से अधिक प्रासंगिक संसाधनों को एकत्रित करके पढ़ने एवं इस माध्यम से वर्तमान चुनी गई शोध समस्या से जुड़ सकने के लिए किया जाता है। अध्ययन की जा रही समस्या पर गहरी समझ बनाने के उद्देश्य से क्षेत्र

अध्ययन के दौरान भी साहित्य समीक्षा की जाती है। साहित्य समीक्षा पूर्व के उन अध्ययनों का अध्ययन है, जिनमें वर्तमान शोध के समान सामग्री मिलती है। यह पूर्व में हुए अध्ययनों अथवा पुरानी और नई समझ के संयोजन से नए अर्थों को खोजने या स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। मुख्य रूप से साहित्य समीक्षा अध्ययन किए गए कार्यो के रिक्त स्थान को पकड़ती है। स्पष्ट है कि साहित्य समीक्षा किसी शोध को उस जगह से आगे बढ़ने में सहायता करती है, जहां पहले के संसाधन रुक गए थे।

अपनी प्रगति जांचें

13) शोध में साहित्य समीक्षा क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

d) लक्ष्य और उद्देश्य

लक्ष्य, वांछित परिणामों या शोध के सामान्य इरादों के व्यापक परिणाम हैं, जो आपके शोध प्रोजेक्ट या थीसिस की एक तस्वीर प्रदर्शित करते हैं। यह दीर्घकालिक अनुसंधान परिणामों को दिखाता है, अर्थात इसे शोध विषय की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को प्रतिबिंबित करना चाहिए। इसे इस तरह से व्यक्त किया जाना चाहिए कि इसे प्राप्त होने पर समझा जा सके।

जब शोध एजेंडे के लिए आपके लक्ष्य स्पष्ट हैं, तो अगला काम लक्ष्य के संबंधित उद्देश्यों को तैयार करना है। अब हमें शोध के उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, यह उद्देश्य शोध से जुड़े होने चाहिए, और इनकी संख्या बहुत अधिक नहीं होनी चाहिए ताकि हम अपने मुख्य उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकें और मुख्य मुद्दे से दूर न हो जाएं।

इस प्रकार, उद्देश्य लक्ष्य के पूरक हैं। उद्देश्य वह वास्तविक कदम हैं, जिन्हें शोधकर्ता अनुसंधान द्वारा प्रत्याशित लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए प्रश्न का उत्तर देने हेतु उठाते हैं। इस प्रकार, शोध उद्देश्य में क्या, क्यों, कौन, कब और कैसे के बारे में बात करते हैं। शोध अध्ययन के दौरान एकाग्र रहने के लिए तथा यह जांचने के लिए की अध्ययन सही ढंग से चल रहा है या नहीं, उद्देश्यों पर वापस आते रहना चाहिए। उद्देश्य यथार्थवादी, विवेकपूर्ण और सटीक रूप से वर्णित होने चाहिए।

अपनी प्रगति जांचें

14) लक्ष्यों और उद्देश्यों को परिभाषित करें। शोध में यह क्यों महत्वपूर्ण हैं?

.....

.....

.....

e) परिकल्पना

परिकल्पना एक अनुमान है। यह शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत समस्या के बारे में एक अटकल या भविष्यवाणी है। यह कुछ ऐसा है, जिसे एक स्पष्टीकरण (इस संदर्भ में, एक सिद्धांत) के रूप में देखा जा सकता है, जिसे तब तक स्वीकार किया जाता है जब तक कि अध्ययित घटना सही साबित न हो या उपयुक्त के रूप में स्वीकार न हो। इसलिए परिकल्पना का उपयोग करने के लिए, चल रहे शोध में किसी स्थापित सिद्धांत का परीक्षण किया जाता है। अनिर्दिष्ट से सटीक निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए क्षेत्र में अवलोकन द्वारा इसका परीक्षण किया जाता है। किसी सिद्धांत को एक तथ्य के रूप में साबित करने के लिए क्षेत्र में सामग्री होनी चाहिए। यदि ऐसा है, तो परिकल्पना सही और मान्य साबित होती है। हालाँकि, वर्तमान में किए जाने वाले ज्यादातर नृजातिक अध्ययनों में अब परिकल्पना का उपयोग नहीं किया जाता है बल्कि शोधकर्ता खुले दिमाग (ओपन माइंड) से क्षेत्र में जाते हैं और क्षेत्र में ही किए गए अवलोकनों के आधार पर सिद्धांतों के निर्माण में विश्वास करते हैं।

अपनी प्रगति जांचें

15) परिकल्पना क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

f) अध्ययन की इकाई और व्यापकता

अनुसंधान हेतु, शोध प्रारूप में विधियों का उपयोग करने से पहले हमें अध्ययन की इकाई और व्यापकता का उल्लेख करना होगा। विश्लेषण की इकाई एक प्रमुख इकाई है जिसका एक अध्ययन में विश्लेषण किया जा रहा है। यह 'क्या' या 'कौन' है जिसका अध्ययन किया जा रहा है। आपके शोध में, विश्लेषण की विशिष्ट इकाइयों में व्यक्ति (सबसे आम), समूह, सामाजिक संगठन और सामाजिक कलाकृतियां शामिल होंगी। व्यापकता से तात्पर्य उस जनसंख्या से है, जो इकाइयों के पूरे समूह का प्रतिनिधित्व करती है, जो कि आपके अध्ययन का केंद्र बिंदु है। इस प्रकार, आपके अध्ययन के उद्देश्य और व्यापकता के आधार पर यह, देश की जनसंख्या, व्यक्ति, किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र, एक विशेष जातीय या आर्थिक समूह की हो सकती है।

अपनी प्रगति जांचें

16) अध्ययन की इकाई और व्यापकता क्या है?

.....

.....

.....

g) प्रयोग की जाने वाली शोध पद्धति

शोध पद्धति, शोध समस्या की जांच के लिए की जाने वाली कार्रवाइयों का वर्णन करती है और समस्या को समझने के लिए एकत्रित तथ्यों को वर्गीकृत करने, चुनने और मूल्यांकन करने के लिए उपयोग की जाने वाली विशेष प्रक्रियाओं या संचालन के तरीकों के औचित्य का वर्णन करती है, जिससे पाठकों को यह छूट मिल जाती है कि वह अपने विवेक से शोध की पूर्ण वैधता और निर्भरता की जांच कर सकें।

शोध पद्धति में प्रक्रियाओं की एक श्रृंखला शामिल होती है, इसलिए आइए हम शोध पद्धति, विधियों, उपकरणों और तकनीकों को अलग से समझते हैं।

पद्धतिः समझने के लिए, यह एक रणनीतिक रूपरेखा है कि अनुसंधान कैसे शुरू किया जाना है। यह उपयोग की जाने वाली विधियों की पहचान भी करता है।

विधियाँ : विधियाँ तथ्य संग्रह की साधन हैं। कुछ प्रमुख विधियाँ अवलोकन, केस–स्टडी, वंशावली, वंशावली विश्लेषण, सांख्यिकीय विधियाँ आदि हैं।

उपकरण और तकनीकें : वास्तव में, प्रविधियों को जिन तरीकों से क्रियान्वित किया जाता है, वहीं तकनीक और उपकरण कहलाती हैं। उदाहरण के लिए, यदि साक्षात्कार एक विधि है, तो साक्षात्कार मार्गदर्शिका (गाइड) एक तकनीक होगी और साक्षात्कार कार्यक्रम एक उपकरण हो सकता है। कुछ लोकप्रिय तकनीकों में सर्वेक्षण, जनगणना, साक्षात्कार आदि शामिल हैं, तो उपकरण के रूप में प्रश्नावली, साक्षात्कार मार्गदर्शिका, साक्षात्कार अनुसूची आदि हो सकते हैं।

शोध प्रारूप के चरणों में द्वितीयक स्रोतों की आवश्यकता का भी उल्लेख किया गया है, यदि शोध की ऐसी मांग है, तो। द्वितीयक तथ्य वह जानकारी हैं, जो पहली बार एकत्र नहीं की जा रहीं, बल्कि मुख्यतः पूर्व में ही एकत्र की जा चुकी हैं और अब उपयोग के लिए विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध हैं, जिनका आप उपयोग कर सकते हैं। ये स्थान एक पुस्तकालय, एक संग्रह, एक डेटाबेस, इंटरनेट आदि कुछ भी हो सकते हैं। द्वितीयक स्रोत आपको अपनी स्वयं की नियोजित शोध समस्या को प्रमाणित करने या अपने शोध निष्कर्षों का परीक्षण करने में मदद करते हैं।

आप जिस तरह का शोध या जांच कर रहे हैं, उसके आधार पर ही तथ्य संग्रह के लिए उपकरण चुने जाएंगे। इकाई 6 और 7 में विधियों, उपकरणों और तकनीकों पर अधिक विस्तृत चर्चा की गई है।

अपनी प्रगति जांचें

17) शोध पद्धति, विधियों, तकनीकों और उपकरणों में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

h) तथ्य (आँकड़) विश्लेषण

अंत में शोध प्रारूप तथ्य विश्लेषण पर जोर देता है, जिसे शोध निष्कर्षों को एक साथ रखने के बाद पूरा किया जाता है। तथ्य विश्लेषण मात्रात्मक अथवा गुणात्मक, दोनों तरह से किया जा सकता है। मात्रात्मक विश्लेषण सांख्यिकीय उपकरणों की मदद से किया जाता है, जिन्हें बड़े करीने से एवं सटीक तरह से दर्शाया जाता है। जबकि गुणात्मक विश्लेषण शब्दों के माध्यम से किया जाता है या जिसे हम आख्यान और विवरण कहते हैं।

i) अध्ययन की प्रासंगिकता

अंत में, शोध प्रारूप में शोधकर्ता को अध्ययन की प्रासंगिकता का उल्लेख करना चाहिए। यह पाठक को यह बताने के लिए है कि– अध्ययन क्यों किया गया है, इसका औचित्य, इसका उद्देश्य, अध्ययन से क्या प्राप्त करना है और इससे किसे लाभ होना है। यह शोध अध्ययन के महत्व के बारे में जानकारी देने वाला विवरण है। यह तर्कसंगत स्पष्टीकरण इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह शोध पांडुलिपि का बेहतर मूल्यांकन करने के लिए पाठक (एक समीक्षक, एक परीक्षक, एक अनुदानकर्ता) की सहायता कर सकता है।

अपनी प्रगति जांचें

18) तथ्य विश्लेषण दोनों हो सकता है:.....(वाक्य पूरा करो)

19) क्या शोध प्रारूप में अध्ययन की प्रासंगिकता के बारे में जानना महत्वपूर्ण है? क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 शोध प्रारूप में संबद्ध पहलू

मुख्य अनुसंधान के लिए प्रारंभिक आधार के रूप में कार्य करते हुए शोध प्रारूप, उपरोक्त पहलुओं के साथ ही कुछ अन्य अंतर्निहित पहलुओं को भी शामिल करता है, जिनकी पूरी शोध प्रक्रिया में योजना बनाने के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन्हें हम ग्रंथ सूची और संदर्भ कहते हैं। इनके साथ फुटनोट (पाद टिप्पणियां), एंड नोट्स (अंत टिप्पणियां), शब्दकोष आदि जैसे छोटे भागों को भी ध्यान में रखा जा सकता है। आइए पहले देखें कि ग्रंथ सूची और संदर्भ क्या हैं।

क) ग्रन्थ–सूची

इसमें वे सभी स्रोत शामिल हैं, जिन्हें शोधकर्ता अपने शोध और लेखन में सहायता के लिए एकत्र करता है, पढ़ता है और आगे बढ़ता है, किन्तु जरूरी नहीं कि उन्हें पाठ में उद्धृत करे ही। इसमें वे सभी प्रकाशित और अप्रकाशित कार्य शामिल हैं, जिनसे शोधकर्ता ने अपना शोध प्रस्ताव या शोध पत्र लिखने के

लिए सहायता ली थी या समझ बनाई थी। मूल रूप से ग्रंथ सूची में उपयोग की जाने वाली उद्धरण शैली ऑक्सफोर्ड और शिकागो शैली हैं।

ख) संदर्भ

इसमें वे स्रोत शामिल हैं, जिनसे शोधकर्ता सिर्फ समझ ही नहीं बनाता बल्कि उनका उल्लेख पाठ में भी करता है। पूरे पाठ में स्रोतों को एक या अधिक बार उद्धृत किया जा सकता है। यदि एक ही स्रोत को लगातार उद्धृत किया जाता है, तो लेखक के नाम और प्रकाशन के वर्ष के स्थान पर, ibid शब्द का प्रयोग किया जाता है। ibid एक संक्षिप्त नाम है और लैटिन शब्द ibīdem से आया है जिसका अर्थ है "वही (उसी स्थान पर)"। मेरे द्वारा उपयोग की जाने वाली मुख्य उद्धरण शैली एपीए, एएमए और एमएलए हैं।

यह महत्वपूर्ण है कि ग्रंथ सूची और संदर्भ दोनों को वर्णानुक्रम (ए से जेड) का पालन करना चाहिए और पहले उपनाम प्रदर्शित करना चाहिए। संदर्भ शैली को देखने के लिए पाठ्यक्रम 102 के व्यावहारिक निर्देशिका को संदर्भित किया जा सकता है।

अपनी प्रगति जांचें

20) ग्रंथ सूची और संदर्भों के बीच मुख्य अंतर क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

ग) फुटनोट (पाद–टिप्पणी)

एक विशेष स्रोत का हवाला देते हुए या किसी शब्द या वाक्यांश आदि की व्याख्या करने वाला एक नोट, उसी पृष्ठ के निचले भाग में पाया जाता है, जिस पृष्ठ में वह शब्द या वाक्यांश दिया गया है। उसे फुटनोट कहते हैं। फुटनोट इस अर्थ में फायदेमंद होते हैं कि पाठक किसी भी सामग्री का विवरण पा सकते हैं, जिसके लिए पृष्ठ के अंत में ही एक संक्षिप्त स्पष्टीकरण या विवरण की आवश्यकता होती है। इसका मतलब यह है कि पाठक के पास इन पृष्ठों के माध्यम से कोई अफवाहजनक जानकारी नहीं मिल रही। यदि वह इस बारे में और अधिक जानना चाहता है तो उसे किसी विशेष अंतिम पृष्ठ तक पहुंचने की आवश्यकता भी नहीं है। हालाँकि फुटनोट की संख्या अधिक होने पर यह पृष्ठ को अव्यवस्थित कर सकते हैं। यदि यह मुख्य पाठ के लिए बहुत कम जगह छोड़ते हैं, तो पृष्ठ की मुख्य सामग्री को प्रतिकूल रूप से प्रभाव पड़ेगा।

घ) एंडनोट्स (अंत–टिप्पणी)

एंडनोट्स में फुटनोट के समान ही सामग्री होती है, लेकिन यह प्रत्येक पृष्ठ के निचले भाग में पाए जाने के बजाय, प्रस्ताव, लेख, आलेख, पुस्तक आदि के अंत में पाए जाते हैं। एंडनोट्स का लाभ यह है कि इससे विशेष शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों, जिन्हें और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है, के सभी

विवरण और अर्थ को एक साथ एक ही स्थान पर देखा जा सकता है। इसलिए पाठक एंडनोट्स को एक साथ आसानी से पढ़ सकता है। जबकि नुकसान यह है कि, पढ़ते समय जब भी पाठक को किसी सामग्री का अर्थ जानने की आवश्यकता होती है, उसे इसके बारे में जानने के लिए अंत तक जाना होगा। बार–बार पृष्ठों को पलटने एवं आगे–पीछे करना पाठक को काफी परेशान कर सकता है।

शोधकर्ता चाहे फुटनोट का उपयोग करे या एंडनोट्स का, एक बात जो उसे ध्यान में रखनी चाहिए वह यह है कि वे मूल पाठ या सामग्री के प्रवाह को बाधित न करे। पाठ में प्रवाह बना रहना चाहिए।

अपनी प्रगति जांचें

21) फुटनोट के एक लाभ का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

22) एंडनोट्स के नुकसान का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.5 शोध प्रारूप में डिजिटल प्रौद्योगिकी की भूमिका

आज शोध प्रारूप तैयार करने से लेकर शोध की समाप्ति तक अनुसंधान की पूरी प्रक्रिया में डिजिटल और ऑनलाइन तकनीक का भरपूर प्रयोग किया जाता है। डिजिटल तकनीक ने अनुसंधान करना, अनुसंधान को डिजाइन करने जैसे कार्यों को बहुत ही आरामदायक बना दिया है। यदि हम शोध प्रारूप के चरणों पर विचार करते हैं, तो विषय के चयन से शुरू होकर, हम समस्या का एक वैध विवरण तैयार करने तक, संसाधनों का पता लगाने और एक क्लिक पर उत्तर पाने के लिए डिजिटल और आभासी प्लेटफॉर्म का उपयोग कर सकते हैं। लैपटॉप, टैबलेट, स्मार्ट फोन जैसे उपकरण अनुसंधान में डिजिटल तकनीक के उपयोग को बेहतर बना सकते हैं। आज असंख्य ऑनलाइन संसाधन हैं, जिससे शोध समस्या को समझने में आसानी होती है। साहित्य समीक्षा, जो किसी भी शोध प्रारूप का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है, इंटरनेट के माध्यम से ब्राउज़ करके तैयार की जा सकती है, और ऑनलाइन रिपॉजिटरी और कंसोर्टियम पर जाकर आसानी से प्रासंगिक सामग्री एकत्र की जा सकती है। सोशल मीडिया भी अनुसंधान प्रारूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जहां से अपार

जानकारी एकत्र की जा सकती है। अब "गूगल फॉर्म" के उपयोग द्वारा प्रश्नावली बनाकर अनुसंधान विधियों के अनुसार अनुसंधान का संचालन आसानी से किया जा सकता है। ये किसी भी मेलिंग या शेयरिंग साइट्स के जरिए एक सेकेंड में कई लोगों के घरों तक आसानी से पहुंच सकते हैं। साक्षात्कार या केस–स्टडी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे जूम, गूगल मीट, व्हाट्सएप वीडियो कॉल इत्यादि के माध्यम से एकत्र किए जा सकते हैं, शोध/अनुसंधान करने की यह प्रक्रियाएं कोविड 19 के दौरान काफी सहयोगी साबित हुई है। यहां तक कि उद्धृत कार्यों को एमएस वर्ड में "उद्धृत कार्यों" विकल्प के माध्यम से हाइलाइट किया जा सकता है और उद्धरण के स्थान पर तुरंत देखा जा सकता है। एसपीएसएस और एनोवा जैसे सॉफ्टवेयर की मदद से सांख्यिकीय विश्लेषण भी आसानी से और बिना किसी जटिलता के किए जा सकते हैं।

शोध प्रारूप में डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग का यह एक संक्षिप्त और सरल विवरण है। जो छात्रों को यह समझने में मदद करने के लिए प्रस्तुत किया गया था कि कैसे शोध प्रारूप और अनुसंधान डिजिटल दुनिया का भी हिस्सा बन गए हैं।

अपनी प्रगति जांचें

23) कुछ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के नाम बताएं जहां एक शोधकर्ता साक्षात्कार आयोजित कर सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 सारांश

शोध प्रारूप पर इस इकाई को इस पाठ्यक्रम से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण पाठों में से एक माना जा सकता है। अनुसंधान क्या है और इसे उपयुक्त तरीकों का उपयोग करके कैसे किया जाता है, इसका बेहतर ज्ञान होना चाहिए। इस पाठ्यक्रम का मुख्य लाभ यह है कि यह शोध प्रारूप निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह वह डिजाइन है, जो एक तर्कसंगत शोध और ज्ञान के अंतिम निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है। इस प्रकार यह इकाई शोध प्रारूप में शामिल प्रत्येक प्रक्रिया पर व्यवस्थित रूप से चर्चा करती है। इस इकाई में इसकी परिभाषा से लेकर इसकी मुख्य विशेषताओं की व्याख्या करने हेतु विवेकपूर्ण तरीके से शोध प्रारूप के प्रत्येक पहलू को शामिल किया गया है। यह इकाई विभिन्न प्रकार के मुख्य शोध प्रारूपों के बारे में भी बात करती है और यह भी स्पष्ट करती है कि कौन–सा प्रकार किस तरह के अनुसंधान के लिए सबसे उपयुक्त है। इस इकाई में, शोध प्रारूप को तैयार करने के चरण, जिन्हें किसी भी शोध की रीढ़ के रूप में देखा जा सकता है, का पूरी तरह से वर्णन किया गया है। इकाई के अंत में शोध प्रारूप और शोध लेखन के कुछ छोटे लेकिन उल्लेखनीय पहलुओं पर भी चर्चा की गई है। अंततः इकाई, अनुसंधान में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर संक्षिप्त अंतर्दृष्टि के साथ समाप्त होती है।

5.7 संदर्भ

Fink, Arlene. (2014). *Conducting Research Literature Reviews: From the Internet to Paper* (4th edition). Thousand Oaks, CA: SAGE

Kerlinger, F. (1986).*Foundation of Behavioural Research* (3rd ed.) New York: Holt, Rinehart, and Winston

Kothari, C.R. (2006). *Research methodology: Methods & Techniques.* (2nd ed.). New Delhi: New Age International (P) Limited Publishers

5.8 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

1) खंड 5.0 में पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें।
2) खंड 5.1 में पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें।
3) खंड 5.1 में तीसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
4) गलत।
5) सांख्यिकीय उपकरण।
6) वर्णनात्मक शोध प्रारूप।
7) व्याख्यात्मक शोध प्रारूप।
8) नियंत्रित समूह और प्रायोगिक समूह।
9) पैनल डिजाइन।
10) खंड 5.3 का भाग क देखें।
11) खंड 5.3 का भाग ख देखें।
13) खंड 5.3 का भाग ग देखें।
14) खंड 5.3 का भाग घ देखें।
15) खंड 5.3 का भाग ङ देखें।
16) खंड 5.3 का भाग एफ देखें।
17) खंड 5.3 के दूसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें।
18) गुणात्मक और मात्रात्मक।
19) खंड 5.3 का भाग आई देखें।
20) खंड 5.4 के भाग क और ख देखें।
21) खंड 5.4 का भाग ग देखें।
22) खंड 5.4 का भाग घ देखें।
23) जूम, गूगल मीट, व्हाट्सएप वीडियो कॉल आदि।

इकाई 6 प्रविधि एवं प्रणाली*

इकाई की रूपरेखा

6.0 परिचय

6.1 प्रणाली एवं पद्धतियाँ

6.2 गुणात्मक और मात्रात्मक प्रविधियाँ

6.3 प्रयोगशाला और क्षेत्र प्रविधियाँ

6.4 नृजातिवर्णन प्रविधियाँ

6.5 एमिक और एटिक दृष्टिकोण

6.6 नवीन नृजातिवर्णन प्रविधियाँ

6.7 सारांश

6.8 संदर्भ

6.9 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई को पढ़ने के बाद, विद्यार्थी सक्षम होगे :

- अनुसंधान कैसे शुरू किया जाए, इस पर योजनाबद्ध रूपरेखा को परिभाषित करना;
- तथ्य संग्रह के माध्यमों की पहचान करना;
- विभिन्न प्रकार के तथ्य संग्रह विधियों की पहचान करना; तथा
- उन्हें मानववैज्ञानिक अनुसंधानों में प्रयोग करना।

6.0 परिचय

अब जब हमें अनुसंधान प्रारूप की पूरी समझ हो गई है, तो आइए इस इकाई में विस्तृत और विशिष्ट तरीके से कार्यप्रणाली और पद्धतियों के बारे में जानने का प्रयास करें। यह अनुसंधान प्रविधियों और कार्यप्रणाली के बारे में हमारे ज्ञान को बढ़ाएगा और शोध प्रक्रिया में हमारी मदद करेगा। सरल शब्दों में कहें तो, "प्रविधि अनुसंधान करने और उसे लागू करने का एक तरीका है, जबकि कार्यप्रणाली सभी शोधों के पीछे का विज्ञान और दर्शन है" (एडम्स जॉन एवं अन्य, 2007)। हालाँकि, अपने छात्रों लिए, हम प्रत्येक बिंदू पर चर्चा करेंगे ताकि आपके मस्तिष्क में संदेह की गुंजाइश बिलकुल न हो या बहुत कम रह जाए, और आप स्पष्ट हो जाएँ कि शोध में कौन सी विधियाँ और कार्यप्रणाली अपनाई जाएं और उनकी क्या भूमिकाएँ जान सकें। आइए पहले विशेष रूप से यह समझने की कोशिश करें कि कार्यप्रणाली का क्या अर्थ है।

*योगदानकर्ता–डॉ. मीतू दास, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान अनुशासन, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू। **अनुवादक**– डॉ. जे.एन. सिंह, अन्वेषक (एसएस) ग्रेड–I, सामाजिक अध्ययन प्रभाग, ओआरजीआई, गृह मंत्रालय।

6.1 प्रणाली और पद्धतियाँ

कार्यप्रणाली कुछ और नहीं बल्कि अनुसंधान पद्धति है और इसमें वे प्रक्रियाएं शामिल हैं जो किसी विषय या शोध समस्या पर एकत्र किए गए तथ्यों के वर्गीकरण, चयन, कार्रवाई और विश्लेषण में सहायता करती हैं। इस प्रकार यह एक प्रासंगिक ढांचा है। किसी भी शोध में अपनाई जाने वाली कार्यप्रणाली पाठक को अध्ययन की संपूर्ण तर्कसंगतता और निर्भरता की समीक्षात्मक जांच करने का अवसर प्रदान करती है। प्रयोग की गई कार्यप्रणाली दो मुख्य प्रश्नों के उत्तर देने में सहायता करती है : अध्ययन कैसे किया गया? और तथ्य विश्लेषण किस प्रकार किया गया? इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से किसी भी शोध के "कैसे" को जानना है और यह सुनिश्चित करना है कि शोध के लक्ष्य और उद्देश्य को स्पष्ट रूप से परिलक्षित किया गया है।

शोधकर्ता को एक बार अपने शोध विषय या समस्या के चयन के बाद सोचना और तय करना होता है कि उत्तर या परिणाम प्राप्त करने के लिए अध्ययन को कैसे आगे बढ़ाया जाए। इस स्तर पर शोधकर्ता को ऐसे प्रश्नों से निपटना होगा– जैसे, कौन सा तथ्य चुनना है और क्या छोड़ना है, तथ्य संग्रह के लिए चुना गया नमूना कौन होना चाहिए, तथ्य कैसे एकत्र करना है और अंत में इसका मूल्यांकन कैसे करना है। यही वह स्थान है, जहां कार्यप्रणाली आती है। सभी चरणों को शोधकर्ता की कार्यप्रणाली के विकल्पों से गुजारा जाएगा, जो सही तरीके से लागू किए जाने पर अच्छा परिणाम देगा। इस प्रकार एक शोधकर्ता को न केवल उस पद्धति के विकल्पों के बारे में पता होना चाहिए, जो वह बनाता है बल्कि यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि ये विकल्प क्यों बनाए गए थे। अनुसंधान प्रारूप, जो शोधकर्ता कार्यप्रणाली द्वारा बनाता है, अनुसंधान के लक्ष्य और उद्देश्यों के लिए सबसे उपयुक्त होता है। एक अच्छी कार्यप्रणाली का पालन करने से वैज्ञानिक रूप से अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

कार्यप्रणाली को मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए दोनों दृष्टिकोणों को एक साथ भी प्रयोग किया जा सकता है। लेकिन यह सुनिश्चित हो लेना चाहिए की यह वही तरीके हैं, जो इस क्षेत्र में लागू होते हैं और कार्यप्रणाली उन तरीकों को दार्शनिक और सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करती है, जिन्हें अनुसंधान की आवश्यकता के अनुसार लागू किया गया है। इसलिए कार्यप्रणाली एक "दार्शनिक ढांचा है जिसके भीतर शोध किया जाता है या वह नींव है, जिस पर शोध आधारित है" (ब्राउन, 2006)।

कार्यप्रणाली पर चर्चा करने के बाद, अब यह सीखना अनिवार्य है कि प्रविधियाँ उस अवधारणा को कैसे आगे बढ़ाती हैं, जो कार्यप्रणाली बताती है। शोध करने के लिए किसी विशेष पद्धति को सही ठहराने के लिए प्रविधियों का उपयोग किया जाता है। वे किसी भी शोध को आगे ले जाने के लिए अनुसंधान उपकरण हैं। इसलिए जब कार्यप्रणाली रणनीति है, तो प्रविधियाँ तथ्य एकत्र करने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरण और प्रक्रियाएं हैं। यह शोध प्रश्न के उत्तर में सहायता करता है। वे किसी भी शोध समस्या की समझ को बढ़ाने के लिए, नए ज्ञान उत्पन्न करने के लिए एवं निष्कर्षों का विश्लेषण करने के लिए सबूत इकट्ठा करने की तकनीक हैं। ये तकनीकें, उपकरण और प्रक्रियाएं विशिष्ट हैं और इनका विकास शोध प्रारूप का एक केंद्रीय हिस्सा है। जब एक शोधकर्ता प्रयोग में लाई जाने वाली विधियों की योजना बनाता है, तो उसे सबसे पहले यह पूछना/जानना होता है कि क्षेत्र से तथ्य कैसे

एकत्र किया जाएगा। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि शोध प्रश्न का उत्तर देने के लिए किस प्रकार के तथ्यों की आवश्यकता है। तो आइए इस इकाई के निम्नलिखित भागों में, एक–एक करके विभिन्न प्रकार की विधियों को लें और प्रत्येक के लिए स्पष्टीकरण प्रदान करें।

अपनी प्रगति जांचें

1) कार्यप्रणाली को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2. प्रविधियों की तुलना में कार्यप्रणाली पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3. शोध में प्रविधियाँ क्या भूमिका निभाती हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6.2 गुणात्मक और मात्रात्मक प्रविधियाँ

अनुसंधान तथ्यों को मोटे तौर पर दो प्रकार की विधियों, गुणात्मक शोध प्रविधियों और मात्रात्मक शोध प्रविधियों के माध्यम से एकत्र किया जा सकता है।

जहाँ गुणात्मक प्रविधियाँ आनुभविक आँकड़ों को एकत्रित करने से संबंधित हैं। वहीं, मात्रात्मक प्रविधियाँ संख्यात्मक और सांख्यिकीय साधनों के माध्यम से आँकड़ों के संग्रह से संबंधित हैं। स्पष्ट है कि इनमें से प्रत्येक विभिन्न प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने के लिए समान रूप से आवश्यक हैं।

अवधारणाओं, दृष्टिकोणों या सजीव अनुभवों को स्पष्ट करने के लिए गुणात्मक प्रविधियों का उपयोग किया जाता है। इन प्रविधियों के माध्यम से, शोधकर्ता शोध विषय पर संपूर्ण समझ बनाने में सक्षम हो जाते हैं, जो साधारणतः समझ में नहीं आता है। सामान्यतः उपयोग की जाने वाली गुणात्मक प्रविधियों में, असंरचित साक्षात्कार

(ओपन एंडेड प्रश्न पूछकर), फोकस समूह चर्चा (सामूहिक जानकारी एकत्र करने के लिए किसी विषय पर लोगों के समूह के साथ बातचीत कर), अवलोकन (एक इरादे के साथ देखने के लिए) और नृजाति वर्णन (क्षेत्र में लंबे समय के तक निवास कर किसी समूह के व्यवहार और संस्कृति का अध्ययन करना) आदि प्रमुख हैं। साहित्य समीक्षा, जो अनुसंधान समस्या से जुड़ी अवधारणाओं और सिद्धांतों को उजागर करती है, को भी गुणात्मक विधि माना जा सकता है।

मात्रात्मक शोध प्रविधियों को संख्याओं और रेखांकन की सहायता से संप्रेषित किया जाता है। इस तरह की प्रविधियों का प्रयोग किसी सिद्धांत या अनुमान का परीक्षण या पुष्टि करने के लिए किया जाता है। इस शोध पद्धति की सहायता से कोई शोध किसी भी शोध समस्या के बारे में सामान्यीकरण योग्य तथ्यों का पता लगा सकता है। सामान्यतः प्रयोग की जाने वाली मात्रात्मक प्रविधियां– प्रयोग (वैज्ञानिक परीक्षण, जहां चर नियंत्रित होते हैं और कार्य–कारण संबंध को निर्धारित करने के लिए प्रभावित होते हैं); अवलोकन (उन विषयों का, जिन्हें नियंत्रित नहीं किया जा सकता), जो संख्यात्मक रूप से दर्ज किए जाते हैं; क्लोज–एंडेड प्रश्नों का उपयोग करके एकत्र किए गए सर्वेक्षण (प्रत्यक्ष, फोन पर या ऑनलाइन माध्यम चुने गए सैम्पल) आदि हैं।

गुणात्मक और मात्रात्मक प्रविधियों के बीच कुछ बुनियादी अंतर हैं। आइए जानें कि वे क्या हैं:

गुणात्मक अनुसंधान की विधियां	मात्रात्मक अनुसंधान की विधियां
मुख्य फोकस अवधारणाओं की जांच करने और नए सिद्धांत/सिद्धांतों को तैयार करने पर होता है।	मुख्य फोकस सिद्धांतों के परीक्षण पर होता है।
समीक्षा, वर्गीकरण और व्याख्या के माध्यम से मूल्यांकन किया जाता है।	सांख्यिकीय साधनों के माध्यम से मूल्यांकन किया जाता है।
मुख्यतः निष्कर्षों को शब्दों के प्रयोग के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है।	मुख्यतः निष्कर्षों को संख्यात्मक तालिकाओं और ग्राफ़ के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है।
छोटे नमूने या समूह पर निर्भर होता है।	बड़े सैम्पल पर निर्भर होता है।
प्रश्न आपस में की जाने वाली बातचीत की तरह खुले होते हैं।	प्रश्न ज्यादातर बंद या अपरिवर्तनशील होते हैं।
मुख्य विशेषताएंः समझ, प्रासंगिकता, जटिलता, व्यक्तिपरकता	मुख्य विशेषताएंः परीक्षण, माप, निष्पक्षता और दोहराव

इन दो प्रमुख गुणात्मक और मात्रात्मक प्रविधियों की इस संक्षिप्त व्याख्या के साथ आइए अब हम अन्य महत्वपूर्ण शोध विधियों के बारे में जानें।

अपनी प्रगति जांचें

4. गुणात्मक प्रविधियां क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

5. मात्रात्मक प्रविधियाँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6. गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान प्रविधियों के बीच कुछ अंतरों की रूपरेखा तैयार करें।

.....

.....

.....

.....

.....

6.3 प्रयोगशाला और क्षेत्र प्रविधियाँ

जब हम प्रयोगशाला शब्द के बारे में सुनते हैं, तो हमारे दिमाग में सबसे पहले जो बात आती है वह है– एक बंद कमरा या उपकरण, यंत्र, मशीनों आदि के साथ कमरों का एक सेट, जो पूरी तरह से वैज्ञानिक अनुसंधान के उद्देश्य से प्रतिबद्ध है। मानवविज्ञान गर्व से अपने आप को एक क्षेत्र विज्ञान का नाम देता है। इसका अर्थ यह है कि जो कुछ भी मानवविज्ञान में हम पढ़ते हैं या अध्ययन करते हैं वह मात्र अनुमान नहीं है, बल्कि सब कुछ क्षेत्र अध्ययन से जानकारी के उत्पादन या एकत्रण द्वारा उपजा वास्तविक ज्ञान है। अतः मानवविज्ञानियों के लिए क्षेत्र (फील्ड) ही प्रयोगशाला है, जहां वह अपने प्रयोग करता है और इस तरह अध्ययन या जांच से एकत्रित परिणाम वैज्ञानिक तथ्य हैं।

अतः आइए समझते हैं कि मानवविज्ञान में वैज्ञानिक अध्ययन कैसे किए जाते हैं और प्रयोगशाला में वास्तव में क्या होता है। अब तक हम यह तो जान ही चुके हैं कि, कैसे मानवविज्ञान में क्षेत्र अध्ययन (फ़ील्डवर्क) की एक लंबी परंपरा है, और कैसे विभिन्न शोध प्रारूप या उसके चरण में हम विभिन्न उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करते हुए वैज्ञानिक तथ्य एकत्रित करते हैं। किन्तु, कोई वैज्ञानिक अनुसंधान क्षेत्र में ही क्यों किया जाता है, किसी बंद कमरे में क्यों नहीं, जिसे हम प्रयोगशाला के रूप में जानते हैं। मानवविज्ञान, जैसा कि अपने नाम से ही स्पष्ट है कि यह मानव का अध्ययन है। मानव विज्ञान मनुष्यों के व्यवहार, कर्मकांडों, मानदंडों, रीति–रिवाजों और उनकी संस्कृतियों के अध्ययन के अलावा, प्राइमेट व्यवहार, मानव जीन, उत्परिवर्तन, डीएनए नमूनों का भी अध्ययन करता है। इन सभी प्रकार के अध्ययनों में, मुख्य विषयक मनुष्य होने के कारण, एक बंद वातावरण में उनका अध्ययन करना हमेशा

संभव नहीं होता है। यद्यपि, कुछ निष्कर्षों की प्राप्ति हेतु मनुष्यों के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के लिए कई बार प्रयोगशालाओं की भी आवश्यकता होती है।

इस प्रकार मानववैज्ञानिक अनुसंधान या प्रयोग करने वाले मानवविज्ञानी के लिए, प्रयोगार्थ बंद कमरे के स्थान पर, क्षेत्र, वास्तविक स्थान जहां व्यक्ति या समूह रहता है, उपयुक्त प्रयोगशाला बन जाता है। शोध की समस्या या चुने हुए विषय के आधार पर, इन प्रयोगों या अवलोकनों को करने के लिए विभिन्न प्रकार की विधियों का उपयोग किया जाता है। जब अनुसंधान प्राकृतिक वातावरण में किया जाता है तो इसे क्षेत्र विधि कहते हैं। हालांकि, गहन अध्ययन के उद्देश्य से आगे के मूल्यांकन या विश्लेषण के लिए, आवश्यकतानुसार, वास्तविक प्रयोगशाला में भी अध्ययन या जांच की जाती है।

हम पाएंगे कि भौतिक या जैविक मानवविज्ञान में, मनुष्यों के जैविक एवं कई पहलुओं के बारे में जानने के लिए शोधकर्ता क्षेत्र और प्रयोगशाला दोनों विधियों को एक साथ प्रयोग करते हैं। जबकि शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान, विकास, अन्य प्रजातियों से संबंध, अनुकूलन आदि जैसे पहलुओं का अध्ययन क्षेत्र में किया जाता है जबकि आनुवंशिकी, रक्त के नमूने, मृत नमूनों की ऊंचाई और वजन या कभी–कभी कंकाल पर किए जाने वाले अध्ययन प्रयोगशाला में ही किए जाते हैं। सामाजिक मानवविज्ञानियों के लिए, 'क्षेत्र' हमेशा जीवित मनुष्यों के अध्ययन एवं उनके वास्तविक व्यवस्था को समझने और या जानने के लिए कि मनुष्य अपने सामाजिक संबंधों और संगठनों को कैसे बनाए रखता है, 'क्षेत्र' ही वास्तविक प्रयोगशाला होगी। यहां मानवविज्ञानी साक्षात्कार सहित अवलोकन जैसी मूल पद्धतियों का उपयोग करते हैं।

क्षेत्र में मनुष्यों का इस प्रकार का अध्ययन और अवलोकन हमें मानवविज्ञान में एक अन्य विधि की ओर ले जाता है, जिसे नृजातिवर्णन प्रविधि कहा जाता है। आइए देखें कि इसमें क्या है।

अपनी प्रगति जांचें

7. मानव विज्ञान अनुसंधान में प्रयोगशाला क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

6.4 नृजातिवर्णन प्रविधियां

नृजातिवर्णन (एथेनोग्राफी)प्रविधियों में एक दृष्टिकोण शामिल होता है, जहां शोधकर्ता लोगों या संस्कृति को उनकी वास्तविक स्थिति में विवरण निर्मित करने के उद्देश्य से अध्ययन करता है, जिसे नृजातिवर्णन (एथेनोग्राफी)साहित्य के रूप में जाना जाता है। इस खाते को एक वैज्ञानिक और वैध स्थिति प्रदान करने के पीछे एक सैद्धांतिक आधार है। नृजातिवर्णन, एक मौलिक, व्यावहारिक फर्स्ट हैण्ड अनुसंधान पद्धति के रूप में देखा जाता है। संस्कृति का अध्ययन उसमें रहने वाले लोगों के दृष्टिकोण से

समाज को देखकर किया जाता है। नृजातिवर्णन एक विधि और उत्पाद दोनों है। नृजातिवर्णन विधियाँ गुणात्मक विधि का एक अच्छा उदाहरण हैं। इसके अलावा, यह एक ऐसी विधि भी है जो आगमनात्मक, खोजपूर्ण और अनुदैर्ध्य है। मुख्य उद्देश्य अध्ययन किए गए समुदाय का समृद्ध एवं विस्तृत विवरण प्राप्त करना है।

एल.एच. मॉर्गन ने 19 वीं शताब्दी के मध्य और अंत के दौरान उत्तरी अमेरिका के इराक्विस की भाषा सीखी और उनकी नातेदारी प्रणाली का भी अध्ययन किया। इस अध्ययन को नृजातिवर्णन अनुसंधान की शुरुआत के रूप में देखा जा सकता है। हालांकि अमेरिका में फ्रांज बोआस और ग्रेट ब्रिटेन में ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की पहले वह व्यक्ति थे, जिन्होंने नृजातिवर्णन क्षेत्र कार्य करने के लिए व्यवस्थित शोध पद्धतियाँ सुझाई। बोआस ने प्रामाणिक ज्ञान इकट्ठा करने के लिए गहन क्षेत्र अध्ययन के महत्व पर जोर दिया, जिसे उन्होंने प्रशांत महासागर के उत्तरी–पश्चिमी तट के क्वाकिउटल के बीच बीस वर्षों से अधिक समय तक रहकर पूर्ण किया था। दूसरी ओर, मालिनोवस्की ने गहन क्षेत्रकार्य का समर्थन करते हुए, समुदाय की स्थानीय भाषा सीखने और प्रयोग करने पर जोर दिया और सहभागी अवलोकन में स्वयं को शामिल किया। सबसे महत्वपूर्ण नृजातिवर्णन प्रविधियों में से एक सहभागी अवलोकन पद्धति, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पापुआ गिनी में पश्चिमी प्रशांत द्वीप समूह के ट्रोब्रिएंड द्वीपवासियों पर मोलिनोवस्की के अध्ययन से सामने आया। इस पद्धति ने उन्हें ट्रोब्रिएंड आइलैंडर्स (1922) की दैनिक गतिविधियों को देखने और उनमें भाग लेने की मौका दिया। इस प्रकार सहभागी अवलोकन नृजातिवर्णन अनुसंधान करने का प्रमुख तरीका बन गया। हम निम्नलिखित परिभाषा के साथ इसकी पुष्टि कर सकते हैं, कि नृजातिवर्णन "किसी संस्कृति या समाज की रिकॉर्डिंग और विश्लेषण, आमतौर पर प्रतिभागियों के अवलोकन पर आधारित होता है और जिसके परिणामस्वरूप लोगों, स्थान या संस्था का लिखित विवरण होता है" (सिम्पसन और कोलमैन, 2017)।

खुले साक्षात्कार और 'अनौपचारिक' वार्तालापों को शामिल करके, सहभागी अवलोकन की नृजातिवर्णन प्रविधि को त्रिभुजन विधि (ट्राइंगुलेशन मैथड) के साथ और विस्तृत किया जा सकता है। यहाँ त्रिभुजन विधि इसलिए अत्यंत आवश्यक हो जाती है, क्योंकि अनुसंधान केवल एक ही विधि पर निर्भर नहीं हो सकता। अन्य नृजातिवर्णन प्रविधियां, जो अवलोकन पद्धति के साथ प्रयोग की जाती हैं, वे हैं– केस–स्टडी, जीवन–इतिहास, वंशावली, वंशावली विश्लेषण आदि। इनके बारे में अधिक जानकारी इकाई 7 में प्रदान की गई है। द्वितीयक नृजातिवर्णन प्रविधियां भी हैं, जो कि संबंधित किसी शोध को लाभ पहुंचा सकती हैं। वे हैं– राजपत्र, सर्वेक्षण, चुनाव रिपोर्ट, समाचार पत्र, शोध लेख, किताबें इत्यादि।

नृजातिवर्णन में एक महत्वपूर्ण विधि डायरी है, जिसका बहुत कम उल्लेख मिलता है। क्षेत्र दौरे के दौरान डायरी एक महत्वपूर्ण साथी है। शोधार्थी अवलोकन, साक्षात्कार और बातचीत के दौरान शोध डायरी में महत्वपूर्ण बिंदुओं को लिख सकता है। क्षेत्र अध्ययन के बाद शाम को आवास में वापस आने पर वह क्षेत्र में देखी गई सभी चीजों को लिख सकता है और दिन के दौरान उत्तरदाताओं के साथ चर्चा कर सकता है। यह बाद में इन बिंदुओं पर न सिर्फ वापस जाने में मदद करेगा बल्कि यह देखने के लिए भी सहायक होगा कि किस बिंदु और अधिक जानकारी एकत्र करने की आवश्यकता है। यह निष्कर्षों को स्पष्टता के साथ विश्लेषण करने में भी मदद करता

है। अन्य नृजातिवर्णन प्रविधियां, अवसरों और दैनिक घटनाओं के दस्तावेजीकरण हेतु फोटोग्राफी और वीडियो बनाना हैं।

अपनी प्रगति जांचें

8. नृजातिवर्णन प्रविधियों को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

9. मौलिक नृजातिवर्णन प्रविधि क्या है और इसका प्रचार किसने किया?

.....

.....

.....

.....

.....

10. नृजातिवर्णन अनुसंधान करते समय फ्रांज बोआस ने किस विधि पर जोर दिया?

.....

.....

.....

.....

.....

6.5 एमिक और एटिक दृष्टिकोण

क्षेत्र अध्ययन में विभिन्न विधियों का प्रयोग करने पर हमें परिणाम अवश्य ही प्राप्त होते हैं। हालाँकि, यह विचारणीय प्रश्न है कि शोधकर्ता द्वारा इन परिणामों को कैसे देखा जाता है। यहाँ पर शोध को एमिक या एटिक परिप्रेक्ष्य से देखने का दृष्टिकोण आता है। यदि परिप्रेक्ष्य अध्ययन की गई संस्कृति के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाता है तो इसे एमिक दृष्टिकोण कहा जाता है और यदि परिप्रेक्ष्य शोधार्थी/पर्यवेक्षक के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाता है तो इसे एटिक दृष्टिकोण कहा जाता है।

प्रत्येक के बारे में विस्तार से समझें तो, एमिक वह दृष्टिकोण है, जो एक विशेष संस्कृति के लोगों के व्यवहार और मानदंडों को इंगित करता है जिसे वे महत्वपूर्ण मानते हैं। यानि, वे उन्हें कैसे देखते हैं, वे अपने जीवन के अनुभवों को कैसे वर्गीकृत करते हैं, वे चीजों को एक विशेष तरीके से क्यों करते हैं, अलग–अलग तरीकों से घटनाओं की कल्पना, वर्णन और युक्तिकरण करते हैं। अर्थात एमिक दृष्टिकोण वह है, जिसे हम उस विशेष संस्कृति के लोगों का दृष्टिकोण कह सकते हैं। एमिक परिप्रेक्ष्यों को जानने के लिए शोधकर्ता लोगों के साथ समय बिताता है, उनका निरीक्षण करता

है, खुद को उनकी दैनिक गतिविधियों आदि में संलग्न करता है। एमिक परिप्रेक्ष्य से सांस्कृतिक विवरणों के साथ एक समृद्ध नृजातिवर्णन तैयार करने के लिए, मानववैज्ञानिकों को काफी प्रयास करना पड़ता है।

एटिक दृष्टिकोण अध्ययन की गई संस्कृति का नहीं बल्कि शोधकर्ता का दृष्टिकोण होता है, जो उसके द्वारा उस संस्कृति के व्यवहार के बारे में दिए गए स्पष्टीकरण जैसे हैं। एटिक विवरण भी शोधकर्ता और मानव विज्ञान समुदाय के अन्य लोगों के बीच बातचीत और चर्चा से निर्मित होते हैं, जो अध्ययन की गई संस्कृति की अपनी समझ प्रदान करते हैं। ये विवरण आम तौर पर वैज्ञानिक रूप से आधारित होते हैं और ऐतिहासिक, राजनीतिक और कई अन्य प्रकार की जांचों से अवगत होते हैं। एटिक दृष्टिकोण के पैरोकारों का मानना है कि एक समुदाय के सदस्य अपनी दैनिक गतिविधियों को एक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से विचार करने की स्थिति में नहीं होते हैं। हालाँकि यह पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया जा सकता है कि संस्कृतियाँ एक बाहरी व्यक्ति (शोधकर्ता) द्वारा देखे जाने पर वास्तविक व्यवहार करेंगी। एक पर्यवेक्षक की उपस्थिति में, दर्शाया गया व्यवहार वह नहीं हो सकता है, जो संस्कृति वास्तव में निजी तौर पर करती है। इसलिए एटिक विवरण में यह वैध तथ्य प्रदान करने में एक समस्या के रूप में कार्य कर सकता है।

शब्द एमिक और एटिक भाषाविद् केनेथ पाइक द्वारा वर्ष 1954 में गढ़े गए थे। उन्होंने इन शब्दों को भाषाई शब्दों 'फोनेमिक' और 'फोनेटिक' से लिया और सुझाव दिया कि उन्हें मानवीय सामाजिक व्यवहार और मानवीय संस्कृति को समझने के लिए एक पद्धतिगत कुंजी के रूप में उपयोग किया जाए। दूसरे शब्दों में उन्होंने मानवीय व्यवहारों को समझने के लिए भाषाई उपकरणों को सामाजिक अनुसंधान उपकरणों में बदलने का प्रस्ताव रखा। बाद में मानवविज्ञानी, वार्ड गुडएनफ और मार्विन हैरिस ने भी विशेष सांस्कृतिक मान्यताओं और प्रथाओं के आधार पर विशेष सांस्कृतिक अर्थों के बारे में जानने के इरादे से मनुष्यों के अध्ययन के इन दो तरीकों की वकालत की।

इस प्रकार, जिस तरह से एक शोधकर्ता किसी समाज, समुदाय या संस्कृति का अध्ययन करने की योजना बना रहा है, उसके आधार पर, वह तदनुसार एटिक या एमिक दृष्टिकोण का उपयोग कर सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन सी विधि उसे सबसे अच्छी लगती है।

अपनी प्रगति जांचें

11. एटिक और एमिक शब्द किसने गढ़ा?

    .....

    .....

    .....

    .....

    .....

12. एटिक दृष्टिकोण का क्या अर्थ है?

    .....

    .....

.....

.....

.....

13. एमिक दृष्टिकोण पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

6.6 नवीन नृजातिवर्णन प्रविधियां

समय के साथ नृजातिवर्णन अनुसंधान के तरीकों में बदलाव आया है। इसका मतलब अब यह एक पारंपरिक क्षेत्र में होना नहीं होता है, जहां कि कोई संस्कृति है, और वहां शोधकर्ता जाकर प्रतिदिन उनकी असंबद्धता का अध्ययन करता है। क्योंकि हमने अब तक यही सीखा है कि नृजातिवर्णन अध्ययन लंबे समय तक अध्ययन किए गए लोगों के साथ रहने, मूल भाषा सीखने और उपयोग करने और अनुष्ठानों और प्रथाओं के सहभागी अवलोकन में स्वयं को शामिल करके किया जाता है।

आज, नृजातिवर्णन क्षेत्र अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में स्थानांतरित हो गया है, विभिन्न विषयों और कई अधिक स्थानों के साथ, नृजातिवर्णन अनुसंधान करने के तरीके भी बदल गए हैं।

आज की दुनिया में, नृजातिवर्णन का क्षेत्र इंटरनेट जैसी आभासी दुनिया भी हो सकती हैं, अस्पताल, मॉल जैसे शहरी स्थान भी। एक क्षेत्र अध्ययन बहु–स्थल भी हो सकती है और साथ ही शोधकर्ता का अपना मूल स्थान भी हो सकता है। आज की मानवशास्त्रीय दुनिया में शोधकर्ता खुद पर शोध करना चाहता है और अपने जीवन के अनुभवों के बारे में विचारोत्तेजक रूप से बात करना चाहता है, तो वह भी अध्ययन का क्षेत्र है।

जाहिर है, नृजातिवर्णन अनुसंधान करने के इन तरीकों ने शोध की विधियों में भी बदलाव लाया है। हालांकि अवलोकन और साक्षात्कार की मूल बातें, अनौपचारिक बातचीत, डायरी लेखन, तस्वीरें लेने के साथ जुड़ी हुई हैं, फिर भी रिक्त स्थान बदल गए हैं। रिक्त स्थान में परिवर्तन के साथ–साथ उत्तर खोजने के तरीकों का उपयोग करने के संदर्भ में शोधकर्ता की स्थिति बदल गई है। नवीन नृजातिवर्णन शैली या कार्यप्रणाली प्रकृति में संज्ञानात्मक है और इसलिए इसे अब संज्ञानात्मक मानवविज्ञान के रूप में भी जाना जाता है। इसे लोकविज्ञान के रूप में भी जाना जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों के जीवन या अध्ययन क्षेत्र में तल्लीन होकर किसी भी व्यवहार के वास्तविक कारण या उद्देश्य को सामने लाना है, जैसा कि अध्ययन किए जा रहे लोगों या संस्कृति द्वारा अधिनियमित या माना जाता है। यह सैद्धांतिक समर्थन के आधार पर टिका एक अनुभवजन्य अध्ययन है। उदाहरण के लिए, एक ऑटो–एथनोग्राफिक शोध पद्धति से पता चलेगा कि अन्वेषक एक ऐसी कथा(आख्यान) का निर्माण करेगा जो

भावनात्मक, याद दिलाने वाली और जीवित अनुभवों पर आधारित हो। यह अन्वेषक के अपने जीवन की व्यक्तिपरक और चिंतनशील व्याख्या पर चर्चा करेगा कि वह रहता है और वह जिस संस्कृति में रहता है, उसके पास बताने के लिए समान कहानियां हैं, वह ऑटो–एथनोग्राफिक अध्ययन को तर्कसंगत और वैज्ञानिक बनाता है।

अपनी प्रगति जांचें

14. संज्ञानात्मक नृजातिवर्णन को किस नाम से भी जाना जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

6.7 सारांश

यह पाठ इस पाठ्यक्रम के प्रमुख भागों में से एक है जो हमें शोध के संचालन में उपयोग की जाने वाली विधियों और कार्यप्रणाली की एक संक्षिप्त लेकिन स्पष्ट रूपरेखा प्रदान करता है। शोध का कोई अर्थ नहीं होगा यदि उसमें कोई पद्धति नहीं होगी। अनुसंधान समस्या, लक्ष्य और उद्देश्य, उत्तरदाता सभी बिखरे हुए होंगे और उनका कोई संबंध नहीं होगा, यदि शोध अध्ययन को स्पष्ट रूप से संबोधित करने के लिए एक पद्धति का निर्माण नहीं किया गया है। कार्यप्रणाली, जो अनुसंधान को पूर्ण करने की एक रणनीति है और नियोजित विधियों द्वारा मान्य है। इसलिए पाठ इस बात के विवरण के साथ शुरू होता है कि कार्यप्रणाली क्या है और विभिन्न शोध विधियों द्वारा इसे कैसे बढ़ाया जाता है। शोध करने के मौलिक गुणात्मक और मात्रात्मक साधनों से शुरू होने वाले इस पाठ के विभिन्न वर्गों में इन विभिन्न विधियों का व्यापक रूप से वर्णन किया गया है। चुनी गई शोध समस्या के प्रकार के आधार पर ये दो बुनियादी विधियां इस संदेह को दूर करती हैं, कि किस पद्धति का पालन करना है। यह पाठ मानव विज्ञान के संदर्भ में प्रयोगशाला और क्षेत्र प्रविधियों के अर्थ को समझाने की कोशिश करता है, अनुसंधान के विषय के रूप में मनुष्यों के साथ एक प्रयोगशाला के रूप में क्षेत्र का उपयोग करने में मानवविज्ञान की विशिष्टता पर प्रकाश डालता है। पाठ अनुसंधान करने के नए नृजातिवर्णन तरीकों के साथ–साथ नृजातिवर्णन विधियों पर भी चर्चा करता है और अनुसंधान के एटिक और एमिक दृ ष्टिकोणों पर भी ध्यान आकर्षित करता है।

6.8 संदर्भ

Adams, J., Khan, H. T., Raeside, R., & White, D. (2007). *Research Methods for Graduate Business and Social Science Students*. Delhi: SAGE Publications India Pvt Ltd,

Brown, R.B. (2006). *Doing Your Dissertation in Business and Management: The Reality of Research and Writing*, CA: Sage Publications

Malinowski, B. (1922). *Argonauts of the western Pacific: An account of native enterprise and adventure in the archipelagoes of Melanesian New Guinea*. London: G. Routledge & Sons.

Simpson B, Coleman S. (2017). 'Ethnography.Glossary of Terms', *Royal Anthropological Institute*.https://www.discoveranthropology.org.uk/aboutanthropology/glossaryofterms.html

6.9 आपकी प्रगति की जांच के लिए उत्तर

1 खंड 6.1 में पहला पैराग्राफ देखें

2 खंड 6.1दूसरा पैराग्राफ देखें

3 खंड 6.1में दूसरा पैराग्राफ देखें

4 खंड 6.2 में तीसरे पैराग्राफ का संदर्भ लें

5 खंड 6.2 में चौथे पैराग्राफ का संदर्भ लें

6 खंड 6.2 में तालिका देखें

7 खंड 6.3 देखें

8 खंड 6.4 में पहले पैराग्राफ का संदर्भ लें

9 सहभागी प्रेक्षण विधि मौलिक नृजातिवर्णन पद्धति है और ब्रोनिस्लाव मेलिनास्की ने इसका प्रचार किया था।

10 गहन क्षेत्र अध्ययन

11 केनेथ पाइक

12 खंड 6.5 में दूसरा पैराग्राफ देखें

13 खंड 6.2 पहला पैराग्राफ देखें

14 लोकविज्ञान (एथनोसांइस)

इकाई 7 उपकरण एवं तकनीक*

इकाई की रूपरेखा

7.0 परिचय

7.1 डेटा संग्रह के प्रकार

7.1.1 प्राथमिक

7.1.2 द्वितीयक

7.2 उपकरण एवं तकनीक

7.2.1 अवलोकन

7.2.2 साक्षात्कार

7.3.3 जीवन–इतिहास

7.2.4 केस स्टडी

7.2.5 वंशवृक्ष और वंशावली

7.2.6 फोकस समूह चर्चा

7.2.7 साक्षात्कार अनुसूची गाइड एवं प्रश्नावली

7.3 प्रतिभागी अवलोकन के अतिरिक्त क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क)

7.3.1 शरीर–संरचना विधि

7.3.2 मानवमिति

7.3.3 वंशावली विश्लेषण

7.3.4 सेरोजेनेटिक्स

7.4 सूचनादाता के बिना क्षेत्रकार्य(फील्डवर्क)

7.4.1 अन्वेषण

7.4.2 उत्खनन

7.4.3 वर्गीकरण

7.5 सारांश

7.6 संदर्भ

7.7 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत शिक्षार्थी सीखेंगे :

- डेटा संग्रह हेतु उपयोग किये जाने वाले विभिन्न डेटा स्रोतों का वर्णन;

***योगदानकर्ता :** डॉ रुक्शाना जमान ,सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,इग्नू,, नई दिल्ली,अनुभाग 7.2 के कुछ अंश पाठ्यक्रम BANC-102 के इकाई 13 से अनुग्रहित है।**अनुवादकः** सुश्री गायत्री, सामग्री लेखक, प्रकाशन अनुभाग, दृष्टि आईएएसए नई दिल्ली।

- फील्डवर्क एवं प्रयोगशाला में प्रयोग किये गए उपकरणों एवं तकनीकों की पहचान; एवं
- पुरातत्व मानवविज्ञान में सूचनादाताओं के बिना किए गए फील्डवर्क की पहचान।

7.0 परिचय

पूर्ववर्ती इकाई में, हमने उन चरणों जैसे शोध डिजाइन तैयार करना, एक शोध विषय का चयन, क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) करना एवं क्षेत्रकार्य के बाद डेटा का संकलन, विश्लेषण और एक रिपोर्ट लिखना, संक्षिप्त में फील्डवर्क का संचालन कैसे करे, पर चर्चा की जा चुकी है। इस इकाई में हम उन उपकरणों एवं तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करेंगे जिनका उपयोग भौतिक, सामाजिक, भाषाई और पुरातात्विक मानवविज्ञानियों द्वारा डेटा संग्रह के लिए किया जाता है।

आपने अनुभव किया होगा कि कुछ भाग बीएएनसी–102 (इकाई 13 और 14) में आपके द्वारा पढ़ी गई बातों के समान है, हम आपको उन इकाइयों को याद करने में मदद करने का प्रयास कर रहे हैं जो आपने पहले से ही इन इकाइयों में अतिरिक्त सूचना के साथ पढ़ रखा है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप पीछे भी जा सकते हैं और बीएएनसी–102 की इकाई 13 को पढ़ सकते हैं जो आपके क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) को तैयार करने में मदद करेगा।

हम पहले ही इकाई 4 में मानवविज्ञान में क्षेत्र की अवधारणा और फील्डवर्क की परंपरा के बारे में विस्तार से चर्चा कर चुके हैं, इस प्रकार अब हम सीधे डेटा के प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के साथ शुरुआत करेंगे।

7.1 प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत

डेटा संग्रह संबंधी मुद्दे पर आगे बढ़ने से पहले, हमें आँकड़ों के प्रकारों को समझना होगा जिन्हें एक मानवविज्ञानी द्वारा इकट्ठा करना आवश्यक है। मुख्य रूप से डेटा के दो स्रोत हैं, अ) प्राथमिक स्रोत ब) द्वितीयक स्रोत। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि डेटा संग्रह का एक प्राथमिक स्रोत क्या होगा?

7.1.1 प्राथमिक स्रोत

आबादी के साथ प्रत्यक्ष संपर्क द्वारा प्राप्त डेटा को प्राथमिक डेटा के रूप में जाना जाता है। फील्डवर्क वह प्राथमिक डेटा होता है जिसमें मानव आबादी के स्वयं की बसावट में अंतक्रिया शामिल होती है, अर्थात् मानवविज्ञानी जाकर वहाँ के लोगों के साथ रहता एवं उन लोगों पर अध्ययन हेतु उन्हें प्रयोगशाला तक नहीं लाता है। भौतिक/जैविक सामाजिक सांस्कृतिक और भाषाई क्षेत्र में कार्यरत मानवविज्ञानियों के लिए सूचना का मुख्य स्रोत क्षेत्र होता है। जबकि पुरातात्विक मानवविदों के फील्डवर्क में अन्वेषण और उत्खनन के माध्यम से सामग्री डेटा का संग्रह शामिल होता है।

इस इकाई के अनुभाग7..2, 7.3 और 7.4 फील्डवर्क में प्रयोग किये जाने वाले प्राथमिक डेटा संग्रह उपकरण एवं तकनीक की गहरी समझ प्रदान करते हैं।

7.1.2 द्वितीयक स्रोत

डेटा के द्वितीयक स्रोत में लिखित दस्तावेजों, प्रकाशित या अप्रकाशित पांडुलिपियों या कथनों के रूप में सभी संस्मरणों को शामिल किया जाता है, वे पुरातत्व उपकरण (या सिक्के, मिट्टी के बर्तन, गहने की कलाकृतियाँ), शिलालेख (जैसा मंदिरों में पाया जाता है), पेंटिंग या कोई अन्य साक्ष्य हो सकते हैं। उन दस्तावेजों को ध्यान में रखना होगा जो कई श्रेणियों से संबंधित है – वे एक अर्थ में आधिकारिक हो सकते है क्योंकि वे संस्थानों में पाए जाते हैं एवं उनके रिकार्ड रखे जाते हैं। भारत में ब्रिटिश काल का सबसे बड़ा योगदान रिकार्ड रूम की स्थापना थी, जहाँ इन दस्तावेजों को पुरानी प्रथाओं को जानने एवं एक अध्ययन हेतु रखा जा सके। इन दस्तावेजों को अक्सर 'आधिकारिक दस्तावेज' कहा जाता है। इस तरह के दस्तावेज राष्ट्रीय अभिलेखागार में उपलब्ध हैं। जनगणना डेटा, जनसंख्या रजिस्टर्स, नमूना सर्वेक्षण डेटा, गजेटर्स, हैंडबुक, लेख, पत्रिकाएँ, किताबें आदि सभी लिखित दस्तावेजों के दायरे में आते हैं। इसके अलावा निजी दस्तावेज भी होते हैं। वे लोगों के साथ होते हैं, जैसे उनकी डायरी, बही–खाता, उनकी घटनाओं का विवरण आदि। दस्तावेजों को जांचकर्त्ता की अनुसंशा पर भी तैयार किया जा सकता है, जब वह अनुसंधान के उद्देश्य से प्रतिवादियों को अपने जीवन का लेखाजोखा लिखने का अनुरोध करता है (या उनके जीवन के कुछ पहलू)। पांडुलिपियाँ जो मूल रूप से हस्तलिखित दस्तावेज होते हैं; उनमें स्क्रॉल या चर्मपत्र, आरेख, मानचित्र सचित्र प्रतिनिधित्व जैसे भित्ति चित्र एवं पेंटिंग्स, रेखा–चित्र शामिल होते हैं। अनुसंधानकर्त्ता इन दोनों प्रकार के दस्तावेजों को उनके विश्लेषण हेतु एकत्र करते हैं। सिनेमा, तस्वीरें अनुसंधानकर्त्ताओं हेतु डेटा के स्रोत होते हैं जो मीडिया के साथ कार्य करते है और कला एवं दृश्य कला का प्रदर्शन करते हैं।

जहाँ ऐसे दस्तावेज उपलब्ध होते हैं वहाँ वीडियो लाइब्रेरी एवं अभिलेखागार होते हैं । मानवविज्ञानी आज आभासी दुनिया को डेटा संग्रह के प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत के लिए एक स्थान के रूप में मानते हैं। गूगल सर्च द्वितीयक डेटा के स्रोत के रूप में बड़े पैमाने पर उपयोग हो रहा है, हालांकि एक शोधकर्त्ता के रूप में इंटरनेट स्रोतों का प्रयोग करते समय सतर्क रहना पड़ता है।

किसी को रिपोर्ट करने से पहले इस तरह के डेटा की प्रमाणिकता को मान्यता प्रदान करने की आवश्यकता है।

अपनी प्रगति जाँचे

1) डेटा संग्रहण के दो प्रमुख स्रोतों की सूची बनाएँ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) डेटा संग्रहण में प्रयोग किये जाने वाले प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के मध्य क्या अंतर होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) कुछ वस्तुओं की सूची बनाएं जिन्हें डेटा संग्रहण में द्वितीयक स्रोत के रूप में प्रयोग किया जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

7.2 उपकरण एवं तकनीक

आइए इस खंड को चावल पकाने के एक उदाहरण के साथ शुरू करते हैं जो हमें उपकरण और तकनीकों की समझ प्रदान करेगा।

वैसे, कोई यह महसूस कर सकता है कि चावल को बनाना कैसे उपकरण और तकनीकों का उदाहरण हो सकता है, क्योंकि चावल बनाना इतना सरल है। हालांकि अगर पता लगाया जाए तो यह मालूम होगा कि चावल पकाने के कई तरीके होते हैं। हम सादा चावल, जीरा चावल, सब्जी चावल, पुलाव चावल एवं आगे और भी कई सूची पर जा सकते हैं। चावल पकाने के प्रकार के आधार पर उपकरण एवं तकनीक भी सामग्री के साथ अलग–अलग होंगे। इसी प्रकार, क्षेत्र की स्थिति में भी एक शोधकर्त्ता को पहले विषय पर निर्णय लेने की आवश्यकता होती है और विषय के आधार पर उपकरण एवं तकनीकों का चयन होता है। प्रमुखता से कहा जाए तो मानव विज्ञान में मुख्य उपकरण हैं – अ) अवलोकन, ब) साक्षात्कार, स) जीवन इतिहास, द) केस अध्ययन और ई) सामूहिक चर्चा पर ध्यान केन्द्रित करना। इनमें से हम विभिन्न तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं, जैसे अवलोकन के लिये प्रतिभागी अवलोकन, अर्ध प्रतिभागी या गैर–प्रतिभागी अवलोकन और साक्षात्कार के लिये हम या तो प्रत्यक्ष साक्षात्कार या अप्रत्यक्ष साक्षात्कार, औपचारिक या अनौपचारिक साक्षात्कार का उपयोग कर सकते हैं साक्षात्कार गाइड या साक्षात्कार सारणी का प्रयोग करते हुए। इसी प्रकार भौतिक/जैविक और पुरातात्विक मानवविज्ञान के लिये उपकरण और तकनीक भी अनुसंधान के प्रकार के आधार पर भिन्न होंगे। हम इस इकाई के खंड 7.3 एवं 7.4 में इस पर चर्चा करेंगे।

7.2.1 अवलोकन

अवलोकन को एक विशेष घटना या परिघटना या यहाँ तक कि दो या दो से अधिक लोगों के बीच संबंधों और पारस्परिक संबंधों को देखने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। हालांकि यह देखना, एक वैज्ञानिक जाँच का हिस्सा बनने के लिये व्यवस्थित और किसी घटना के संदर्भ में होना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी समुदाय में जाते हैं एवं गाँव में एक वृक्ष का अवलोकन करते हैं। वृक्ष का वर्णन करने के लिए, गाँव की अवस्थिति (लोकेशन) पर्याप्त नहीं है, इस वृक्ष को समुदाय की गतिविधियों से संबंधित करने की भी आवश्यकता है, कैसे लोग स्वयं को वृक्ष से संबंधित करते हैं, समुदाय के जीवन में वृक्ष का महत्व आदि। यदि इनका अवलोकन, रिकार्ड एवं रिपोर्ट किया जाए तो यह वृक्ष वैज्ञानिक अवलोकन का एक भाग बन जाता है। अवलोकन को आगे विभाजित किया गया है : अ) प्रतिभागी अवलोकन, ब) गैर–प्रतिभागी अवलोकन, और स) अर्ध–प्रतिभागी अवलोकन । जबकि कुछ लोग इस बारे में बात करते हैं : अ) प्रत्यक्ष प्रतिभागी, और ब) अप्रत्यक्ष प्रतिभागी।

प्रतिभागी अवलोकनः प्रतिभागी अवलोकन अपने अस्तित्व का श्रेय मालिनोवस्की को देता है जिनके पापुआ न्यू गिनी के ट्रोब्रिएंड आइलैंडर्स के बीच किए गये अध्ययन ने मानव विज्ञान में फील्डवर्क के लिये पूर्वानुमान स्थापित किया था। मालिनोवस्की का फील्डवर्क इस तथ्य के लिये ध्यान आकर्षित करता है कि इसमें 1914–1918 तक क्षेत्र में लगभग उन्तीस महीने का एक लंबा प्रवास शामिल था। मालिनोवस्की का फील्डवर्क क्लासिक बन गया क्योंकि उन्होंने भविष्य के मानवशास्त्रियों के लिए एक ट्रेंड की स्थापना के लिये मूल या देशज भाषा का उपयोग किया।

प्रतिभागी अवलोकन अध्ययन के अन्तर्गत शोधार्थी समुदाय की गतिविधियों में भाग लेकर बराबरी में सहभाग करता है जहां शोधकर्ता सीधे समुदाय या गतिविधि का हिस्सा बनने के लिए खुद को शामिल करता है। मूल रूप से एक 'इनसाइडर' के रूप में एक राय प्राप्त करने की कोशिश करता है। पहले के समय में लोगों के बीच रहने के लिये जोर दिया जाता था, हालांकि कॉर्पोरेट, बाजार, व्यवसाय, मीडिया, कला प्रदर्शन आदि के अध्ययन के साथ रूझानों में परिवर्तन आया है।

गैर–प्रतिभागी अवलोकन : गैर–प्रतिभागी अवलोकन में शोधकर्त्ता प्रत्यक्ष रूप से शामिल हुए बिना दूर से किये गए अध्ययन के अन्तर्गत समुदाय की गतिविधियों का अवलोकन करता है। यहाँ शोधकर्ता तटस्थ होता है एवं अध्ययन के तहत लोगों के जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं करता है। शोधकर्ता यहाँ 'बाहरी व्यक्ति' के रूप में टिप्पणियों और डेटा को रिकार्ड करता है; वस्तुनिष्ठ तरीके से गतिविधियों को देखता है, जबकि, यदि पर्यवेक्षक भाग लेता है और शारीरिक एवं भावनात्मक दोनों रूप से शामिल होता है, अवलोकन की प्रकृति व्यक्तिनिष्ठ हो जाती है, जहाँ पर्यवेक्षक न सिर्फ अवलोकन के आधार पर डेटा को रिकार्ड करता है बल्कि उसके व्यक्तिगत अनुभवों को भी शामिल करता है।

अर्द्ध–प्रतिभागी अवलोकन : अधिकांश मामलों में शोधकर्त्ताओं द्वारा फील्ड में किये गए अवलोकन को अर्द्ध–प्रतिभागी अवलोकन कहा जाता है क्योंकि कई मामलों में पूर्ण–भागीदारी संभव नहीं होती। कई बार शोधकर्त्ता के लिये फील्ड संबंधी परिस्थिति में प्रत्यक्ष रूप से शामिल होना संभव नहीं होता। उदाहरण के लिये एक समुदाय में रिवाजों के गमन का अध्ययन करते समय, एक शोधकर्त्ता लड़के और लड़कियों के

लिए किए जा रहे आरंभिक रिवाजों का नजदीकी रूप से अवलोकन कर सकता है, हालांकि शोधकर्ता व्यक्तिगत रूप से दीक्षा कार्यक्रम में प्रतिभाग नहीं कर सकता–इस प्रकार भले ही यहाँ पर भागीदारी है, परंतु अभी तक यह पूरा नहीं है। इस संबंध में विक्टर टर्नर के प्रतीकों पर किये गए कार्य एवं जांबिया के निदम्बू लोगों के मध्य के आरंभिक रिवाज एक उदाहरण के रूप में पर्याप्त है। इसी प्रकार, कॉर्पोरेट घरानों, व्यावसायिक उपक्रमों, मीडिया, प्रदर्शन कला इत्यादि के मध्य कार्य करते समय, इन क्षेत्रों में पूरी तरह से कार्य करना या संगठनों के लिय कार्य करना सिर्फ उनके अवलोकन हेतु संभव नहीं है।

7.2.2 साक्षात्कार

'मूलरूप से साक्षात्कार सामाजिक संपर्क की एक प्रक्रिया है', जैसा कि गुडे और हाट (1981) कहते हैं। एक क्षेत्र की स्थिति में, अवलोकन हेतु यह पर्याप्त नहीं होता। अवलोकन को परिघटना, घटनाओं एवं आयोजनों की पूछताछ से जुड़ा होना चाहिए। साक्षात्कार आयोजित करने के कई तरीके हैं क्योंकि साक्षात्कार के कई प्रकार होते है। मूलभूत साक्षात्कार तकनीकें हैं – अ) प्रत्यक्ष साक्षात्कार; और ब) अप्रत्यक्ष साक्षात्कार।

प्रत्यक्ष साक्षात्कार में, शोधकर्त्ता सूचनादाता से मिलता है एवं एक आमने–सामने का साक्षात्कार आयोजित करता है जबकि अप्रत्यक्ष साक्षात्कार में शोधकर्त्ता या तो सूचनादाता को मेल/पोस्ट, ई–मेल के द्वारा साक्षात्कार के प्रश्न भेज सकता है या वीडियो, वेब या टेलीफोनिक साक्षात्कार से इसका संचालन कर सकता है।

प्रत्यक्ष साक्षात्कार औपचारिक या अनौपचारिक हो सकता है। एक औपचारिक साक्षात्कार में, एक शोधकर्त्ता को कुछ प्रोटोकॉल के पालन की आवश्यकता होती है, जैसे साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति से अग्रिम मिलने का समय लेना, सूचनाकर्त्ता की सहमति, साक्षात्कार हेतु स्थान एवं समय को तय करना। कई मामलों में, साक्षात्कार के समय की अवधि भी पूर्व–निर्धारित होती है। इस प्रकार के साक्षात्कार में सरकारी अधिकारी या उनके क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति जिनके लिये समय ही 'सार' है। हालांकि, एक गाँव में क्षेत्रकार्य होने की स्थिति में अधिकांश साक्षात्कार, अनौपचारिक होते हैं और कई बार प्रकृति में तात्कालिक होते हैं। जब एक शोधकर्त्ता लोगों के साथ रह रहा होता है, वह (लड़का/लड़की) समुदाय के लोगों के साथ काम करते हुए साक्षात्कार आयोजित कर सकता है, कुछ सामुदायिक कार्य में मदद करते हुए या गाँव के चाय दुकान पर चाय का प्याला साझा करते हुए या किसी एक के स्थान पर। इसे कई मानवविज्ञानियों (फोनेटिन, 2014: 77) द्वारा 'डीप हैंगिंग आउट' कहा गया। फील्डवर्क के दौरान चूँकि फील्ड में शोधकर्त्ता मौजूद रहता है, प्रत्यक्ष साक्षात्कार एक मानक है, यह औपचारिक या अनौपचारिक हो सकता है। किसी भी प्रकार के साक्षात्कार के संचालन के समय भागीदारों की सहमति को या तो मौखिक या गैर–मौखिक सार माना जाता है। साक्षात्कार लेते समय अप्रत्यक्ष साक्षात्कार की अपेक्षा प्रत्यक्ष साक्षात्कार का लाभ है कि यह सिर्फ वह नहीं होता जो महत्वपूर्ण है एवं बोला गया हो बल्कि कैसे बोला गया है यह भी समान रूप से महत्वपूर्ण होता है एवं डेटा का एक महत्वपूर्ण पक्ष होता है। लोग शायद एक चीज कह सकते हैं या एक तरीके से इसे कह सकते हैं कि, क्या वे बोलते हैं, से अलग होता है कि क्या वे कहना चाह रहे थे। एक मौन या ठहराव या बोलने की अनिच्छा भी अपने तरीके से डेटा है। चेहरे की अभिव्यक्ति एवं भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को वास्तव में क्या बोला गया, के साथ रिकार्ड किया जाता है। इस प्रकार, मानवविज्ञानियों के लिये औपचारिक संरचित एवं

प्रतिबंधित साक्षात्कार की तुलना में आमने–सामने के साथ–साथ ओपन एंड साक्षात्कार बहुत पसंदीदा तकनीक मानी जाती है, जिसे हम ओपन एंड साक्षात्कार कहते हैं वह विचारों के मुक्त प्रवाह की भी अनुमति देता है, जोकि डेटा प्रारुप में संभव नहीं होता।

7.2.3 जीवन इतिहास

जीवन इतिहास का उपयोग मानवविज्ञानी द्वारा किसी व्यक्ति के जीवन के व्यापक विवरण को प्रकट करने के लिए किया जाता है, इसे चाहे व्यक्ति द्वारा या दूसरों द्वारा, या दोनों द्वारा लिखित या सुनाई गई हो (लैंग्नेस, 1965)। जीवन इतिहास वे विशेषताएँ प्रस्तुत करता है जो व्यक्तियों के लिये विशिष्ट होती हैं और उन्हें समूह में दूसरों से अलग करती है (युंग 1996 : 26)। यह कई बार एक समूह की विशेषताओं, जीवन पद्धति का प्रतिनिधित्व भी कर सकता है। जिस व्यक्ति के जीवन के इतिहास को ध्यान रखना है, उसके चयन का मानदंड उस समुदाय के सदस्य के रूप में उस व्यक्ति के योगदान पर निर्भर करता है। इसके लिये नाम और प्रसिद्धि युक्त प्रतिष्ठित व्यक्ति होना जरूरी नहीं।

यह एक ऐसा व्यक्ति हो सकता है जिसे आप प्रमुख सूचनाकर्त्ता के रूप में चयनित करते हैं और जो आपके अध्ययन के विषय के लिये प्रासंगिक ज्ञान और एक अंदरूनी ज्ञान का दृष्टिकोण प्रदान कर सके। एक प्रमुख सूचनाकर्त्ता को सामान्यतः एक शोधकर्त्ता द्वारा सौहार्द निर्माण के समय चुना जाता है जब शोधकर्त्ता क्षेत्र स्थान में जाकर समुदाय को जानने और परिवेश में सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करता है। एक जीवन इतिहास के संग्रह के पीछे तर्क यह है कि लोग शून्य में नहीं रहते। वे समाज में रहते है और इस प्रकार इनके मानदंडों और मूल्यों द्वारा निर्देशित होते हैं। इतिहासकारों और जीवनीकारों जो अनूठे एवं शक्तिशाली व्यक्तियों के जीवन इतिहास को ढूंढ़ते रहते हैं, के विपरीत मानवविज्ञानी सामान्य व्यक्तियों के जीवन इतिहास को संग्रहित करते हैं अपने सामान्य दिन–प्रतिदिन अस्तित्व में; ताकि वे एक समय अवधि में सामान्य संस्कृति और जीवन के तरीकों के बारे में जान सकें। जीवन इतिहास अक्सर परिवर्तन और सामाजिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं और संक्रमण के प्रभाव को दर्शाता है। मानवविज्ञान के सबसे प्रसिद्ध जीवन इतिहास की एक पुस्तक ***पैड्रो मार्टिनेज: अ मैक्सिकन पिजेंट एंड हिज फैमली,*** है जो ऑस्कर लुईस (1964) द्वारा लिखी गयी है,, जो एक साधारण मैक्सिकन व्यक्ति और उसके परिवार के जीवन का विस्तार से वर्णन करता है। व्यक्तिगत जीवन इतिहास विधि अमेरिकी सांस्कृतिक मानवविज्ञान में विकसित की गई थी जब इसने तुप्त हो रही जनजातियों की संकटपूर्ण स्थिति का सामना किया था। मानवविज्ञानी अक्सर, जनजातियों के केवल एक या बहुत कम सदस्यों का पता लगा पाते थे एवं किसी एक व्यक्ति के विस्तृत जीवन इतिहास का पता लगा पाना ही एकमात्र तरीका था जिसमें एक लुप्त हो चुकी जनजाति के बारे में कुछ पुनर्निमित किया जा सकता था।

7.2.4 केस स्टडी

हर्बर्ट स्पेंसर अपने मानवविज्ञान संबंधी कार्यों में केस सामग्री का उपयोग करने वाले पहले समाजशास्त्री थे। एक केस अध्ययन में एक विशेष वृत्तांत, घटना या परिघटना का गहन अनुसंधान शामिल होता है जिसमें एक समुदाय या लोगों का एक समूह प्रत्यक्ष रूप से शामिल या प्रभावित होता है। यहाँ, हम भोपाल गैस त्रासदी का एक उदाहरण ले सकते है जो 3 दिसंबर, 1984 को भोपाल में हुयी थी। कोई शारीरिक या

जैविक मुद्दों,मनोवैज्ञानिक मुद्दों या औषधीय – कानूनी मुद्दों के संदर्भ में त्रासदी के परिणामों का अध्ययन कर सकता है। इस प्रकार के एक अध्ययन में त्रासदी के साथ इसके संबंध की शर्ते और व्यक्ति कैसे त्रासदी से संबंधित है, के संदर्भ में समूह की समरूपता का वर्णन किया जा सकता है। मानवीय मन की घटनाओं और परिघटनाओं को याद करने का एक तरीका है जो उनके स्वयं के लिये प्रासंगिक है। इस प्रकार विभिन्न लोगों की केस स्टडी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से घटना से जुड़ी होती है, जो उसी संदर्भ में सूचना प्रदान कर सकती है, लेकिन घटना की समझ एवं यादों के विभिन्न स्तरों या दृष्टिकोणों से। एक केस स्टडी एक समग्र पद्धति है जो हमें एकल घटना या वृत्तांत पर एक समग्र दृष्टिकोण प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। कुछ मानवशास्त्री जैसे मैक्स ग्लूकमैन एवं वैन वेलसन ने भी इसे तैयार किया था जिसे विस्तारित केस विधि के रूप में जाना जाता था। इसका उपयोग अक्सर संघर्षों एवं कानूनी विवादों के विश्लेषण के लिये किया जाता था और इसमें मूल रूप से केस को बाद में देखना या लंबी समय अवधि तक एक घटना का चलना शामिल था, ताकि किसी को न केवल संचरनाओं और मानदंडों में अंतर्दृष्टि मिल सके, बल्कि सामाजिक जीवन की प्रक्रियाओं में भी।

7.2.5 वंशवृक्ष और वंशावली

वंशावली वंश एव वंश रेखा का पता लगाने में मदद करती हैं। यह मानवशास्त्रीय फील्डवर्क के साथ एक अभिन्न हिस्सा बनाता है क्योंकि यह अतीत को वर्तमान से जोड़ता है। वंशावली अध्ययन ने पूर्वजों और पूर्वजों की पूजा से जुड़े मिथकों और मान्यताओं का अनावरण भी किया है। उदाहरण के लिये, एक *कार्बी* गांव में एक वंशावली अध्ययन के दौरान, यह देखा गया कि परिवार के कई लोगों ने समान नाम साझा किए थे। वंशावली से पता चला कि एक परिवार में नवजात शिशु का नामकरण उन पूर्वजों के बाद तभी रखा जा सकता है जब उनके लिये ***चोमंगकान*** (पूर्वज पूजा से संबंधित अनुष्ठान) समारोह मनाया जा चुका हो। ***चोमंगकान*** समारोह के लिये धन और वित्त की एक बड़ी राशि की आवश्यकता होती है, कर्बियों ने इस रस्म को निभाना लगभग बंद कर दिया है और गाँव में आखिरी बार ***चोमंगकान*** कुछ बीस वर्ष पूर्व हुआ था, जब नब्बे के दशक के अंत में अध्ययन किया जा रहा था। इस प्रकार, बच्चों का नाम परिवारों में एक ही पूर्वज के नाम पर रखा जा सकता था (जमन 2003)। वंशावली की एक गहरी समझ हेतु कृपया बीएएनसी–102 इकाई 6 का संदर्भ लें : संस्थान II: रिश्तेदारी परिवार और विवाह।

7.2.6 फोकस समूह चर्चा

अब तक हम समुदाय में व्यक्तियों के साथ शोधकर्त्ता द्वारा प्रत्यक्ष या आमने–सामने साक्षात्कार के माध्यम से एक–एक के साथ बातचीत पर चर्चा कर रहे है। फोकस समूह चर्चा का एक तरीका है जो समुदाय के लोगों के एक समूह का एक साथ साक्षात्कार करता है, जो अध्ययन के विषय हेतु योगदान कर सकते हैं। शोधकर्ता कई बार एक से अधिक लोगों के साथ एक ही विषय पर बातचीत करने की आवश्यकता महसूस कर सकता है या विषय पर कई लोगों की राय अनुसंधान के लिये फायदेमंद साबित हो सकता है। ऐसे मामले में फोकस ग्रुप डिस्कशन (या FGD) आयोजित किया जाता है। FGD आयोजित करते समय, समूह में 8–10 लोग शामिल होते हैं। एक छोटा समूह प्रबंधनीय होता है एवं मध्यस्थ बातचीत जारी रख सकता है। अगर

समूह बड़ा है, तो कुछ बोलने में सहज महसूस नहीं कर सकते, जबकि अन्य बातचीत के प्रवाह में हावी हो सकते हैं। FGD में, सामान्य तौर पर एक विषय समूह या विभिन्न हितधारकों का चयन किया जाता है ताकि एक ही विषय पर उनके विचार और राय को समझा जा सके। जबकि FGD के संचालन के दौरान शोधकर्त्ता इसमें भाग नहीं लेता, लेकिन अवलोकन करता है और पूरे सत्र को रिकार्ड करता है। यह तकनीक लक्ष्य–उन्मुख और क्रियात्मक अनुसंधान के लिये अधिक उपयुक्त है, जहाँ कोई केवल एक पहलू पर ध्यान केन्द्रित कर रहा हो, जैसे गाँव में पोलियो वैक्सीन लगाना या एक नई कल्याण योजना की शुरुआत के प्रति लोगों के दृष्टिकोण का आकलन करना।

मात्रात्मक अनुसंधान के लिये इसका उपयोग शायद ही कभी किया जाता है।

7.2.7 साक्षात्कार अनुसूची गाइड एवं प्रश्नावली

साक्षात्कार के संचालन हेतु हमें एक व्यवस्थित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। प्रश्नों को इस प्रकार से तैयार किया जाता है कि शोधकर्त्ता साक्षात्कार के दौरान सूचनाकर्त्ताओं से प्रासंगिक जानकारी हासिल कर सके। अनुसंधान कार्य की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रकार की साक्षात्कार अनुसूची और गाइड तैयार की जाती है। शोधकर्त्ता द्वारा प्रत्यक्ष साक्षात्कार के लिए या तो एक संरचित साक्षात्कार अनुसूची या असंरचित साक्षात्कार गाइड तैयार किया जाता है।

साक्षात्कार अनुसूची : साक्षात्कार अनुसूची एक साक्षात्कार के दौरान शोधकर्त्ता द्वारा उपयोग किया जाने वाला प्रारूप है। एक साक्षात्कार अनुसूची या तो संरचित या तो असंरचित हो सकती है। एक संरचित साक्षात्कार अनुसूची प्रश्नों का एक निश्चित प्रारुप होती है, जो शोधकर्त्ता एक साक्षात्कार संचालन के समय उपयोग में लाता है, जो मुख्यतः सर्वेक्षण करने, या मात्रात्मक डेटा एकत्र करने के लिये उपयोग में लाया जाता है। जनगणना डेटा सामान्य रूप से निश्चित संरचित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग करके एकत्र किया जाता है। ज्यादातर मामलों में ऐसे मात्रात्मक डेटा को संकलित, सारणीबद्ध और विश्लेषित किए जाने की आवश्यकता होती है।

साक्षात्कार गाइड : असंरचित साक्षात्कार गाइड का प्रयोग साक्षात्कार लेने के लिए किया जाता है, जिसमें एक सख्त प्रारुप का पालन नहीं किया जाता और मुख्य रूप से गुणात्मक डेटा के लिये प्रयोग किया जाता है। साक्षात्कार गाइड उन विषयों से संबंधित कुछ बुनियादी प्रश्नों की संरचना बनाने में मदद करता है जिनकी प्रासंगिकता और है एक साक्षात्कार के दौरान जिन्हें पूछे जाने की आवश्यकता है, जो किसी भी निर्धारित ढांचे में नहीं हो सकती है। ये प्रश्न एक बातचीत में प्रवाह को बनाए रखने में मदद करते हैं और साक्षात्कारकर्ता को भी बातचीत पर वापस लाने में मार्गदर्शन देते हैं जब सूचनाकर्त्ता विषय से भटक जाते है और दूर चले जाते हैं। एक साक्षात्कार गाइड का उपयोग करके एक साक्षात्कार मुक्त प्रवाह हो सकता है जैसे कि जीवन इतिहास या केस स्टडी के लिये सूचना एकत्र करते समय।

प्रश्नावली : साक्षात्कार का संचालन करते समय जहाँ शोधकर्त्ता भौतिक रूप से उपस्थित नहीं होता, शोधकर्त्ता सूचनाकर्ता को दस्तावेज भेजता है एवं सूचना को सूचनाकर्त्ता द्वारा भरा जाता है। ऐसे दस्तावेज को प्रश्नावली कहा जाता है। वर्चुअल स्पेस में भी प्रश्नावली का उपयोग किया जा सकता है जैसे सर्वेक्षण प्रारुप को तैयार करना जिसे सोशल नेटवर्किंग साइटों पर ऑनलाइन पोस्ट किया जा सकता है, जो

उत्तरदाताओं को एक प्रिंटआउट लिये बिना उसी प्रकार से ऑनलाइन भरने हेतु अनुमति प्रदान करता है। एक साक्षात्कार अनुसूची और एक प्रश्नावली के मध्य मूल अंतर यह होता है कि साक्षात्कार अनुसूची साक्षात्कारकर्त्ता द्वारा फील्ड में प्रशासित होती है, एवं यह शोधकर्त्ता होता है जो शीट में जानकारी भरता है जबकि एक प्रश्नावली के लिये शोधकर्त्ता सूचनाकर्त्ता के सामने सीधे उपस्थित नहीं होता है, जब वह उत्तर को भरता/भरती है। एक प्रश्नावली के लिये सवालों का क्रम बहुत महत्वपूर्ण होता है। जब कोई सरल एवं स्पष्ट सवालों के साथ शुरू करता है जिसका आसानी से उत्तर दिया जा सकता है एवं आगे और कठिन एवं चिंतनशील प्रश्नों के साथ बढ़ा जाता है। अक्सर इसे बहुविकल्प प्रश्नों के रूप में जाना जाता है जहाँ एक को कई विकल्पों में से चुनना होता है। साथ ही, जिसे टेस्ट प्रश्न के रूप में जाना जाता है, को स्थान देने की जरूरत होती है। महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तरों की विश्वसनीयता के आकलन के लिये किसी को समान सूचना पर बहुप्रश्नों की रूपरेखा तैयार करनी होती है। एक प्रश्नावली को प्रबंधित करने हेतु समूह को फार्म को भरने हेतु पर्याप्त रूप से साक्षर होना पड़ता है। यह एक खामी है जो साक्षात्कार अनुसूची का संचालन करते समय वहाँ नहीं है (ज्यादा सूचना के लिये बीएएनसी 102 प्रोजेक्ट मैनुअल के खंड 5 की जाँच करें)।

अपनी प्रगति जाँचे

4) प्रतिभागी अवलोकन किस मानवविज्ञानी के कार्य से जुड़ा है?

.....

.....

.....

.....

.....

5) मानवविज्ञानियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली विभिन्न प्रकार की अवलोकन तकनीकों का नाम बताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

6) 'साक्षात्कार बातचीत की एक प्रक्रिया है।' बताएँ यह कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

.....

.....

7) 'मानवविज्ञान में जीवन इतिहास सिर्फ प्रमुख व्यक्तियों का लिया जाता है। बताएँ क्या निम्नलिखित कथन सही है या गलत।

.....

.....

.....

.....

.....

8) किस समाजशास्त्री ने पहली बार अपने फील्डवर्क में केस स्टडी विधि का इस्तेमाल किया था?

.....

.....

.....

.....

.....

9) 'हमें फोकस समूह चर्चा में लोगों के एक समूह की आवश्यकता है।' बताएं निम्नलिखित कथन सही है या गलत?

.....

.....

.....

.....

.....

10) 'मानवविज्ञानी डेटा एकत्र करने के लिये साक्षात्कार अनुसूची और गाइड का उपयोग करते हैं।' निम्नलिखित कथन सही है या गलत?

.....

.....

.....

.....

.....

11) 'एक मानवविज्ञानी एक साक्षात्कार के दौरान प्रश्नावली भरता है।' निम्नलिखित कथन सही है या गलत?

.....

.....

.....

7.3 प्रतिभागी अवलोकन से परे क्षेत्रकार्य(फील्डवर्क)

अब तब, हमने उन उपकरणों और तकनीकों पर चर्चा की जो ज्यादातर गुणात्मक अनुसंधान में मदद करते हैं। गुणात्मक शोध में अवलोकन एवं साक्षात्कार रीढ़ माने जाते हैं। पाठ के इस भाग में हम चर्चा करेंगे कि भौतिक/जैविक मानवविज्ञानी मात्रात्मक अनुसंधान कैसे करते हैं। भौतिक/जैविक मानवविज्ञानी का कार्य विभिन्न वातावरणों के प्रति मानव भिन्नता, वृद्धि और अनुकूलन की समझ के इर्द–गिर्द घूमता है। ये ऐसे पहलू है जिनका आसानी से अवलोकन नहीं किया जा सकता या साक्षात्कार के द्वारा सूचना एकत्र नहीं की जा सकती। भौतिक/जैविक मानवविज्ञानी प्रतिभागी अवलोकन से परे फील्ड में सूचनाकर्त्ताओं के व्यावहारिक प्रेक्षणों एवं मापों का उपयोग करते हैं। एक आबादी मे मानव भिन्नता एवं वृद्धि के मापन एवं निर्धारण हेतु कुछ उपकरणों की आवश्यकता होती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये वे शारीरिक विधि एन्थ्रोपोमेट्रिक(मानवमिति) माप, सेरोजेनेटिक्स, वंशावली(पेडेग्री) विश्लेषण एवं सबसे हाल में आणविक जीवविज्ञान की तकनीक का उपयोग करते हैं।

7.3.1 शरीर–संरचना विधि

भौतिक/जैविक मानवविज्ञान यह निर्धारित करने का प्रयास करता है : अ) मानव उत्पत्ति और उनके गैर–मानव प्राइमेट्स के मध्य की कड़ी और ब) विलुप्त एवं मौजूदा मानव आबादी में भौतिक विभिन्नताएँ।

तुलनात्मक शरीररचना विज्ञान के ज्ञान और मानव उत्पत्ति को समझने के लिये कंकाल जीव विज्ञान, मानव अस्थि विज्ञान और मानव विज्ञान को मानव शरीर रचना के महत्वपूर्ण घटक के रूप में माना जाता है।

मानव शरीररचना विज्ञान(एनाटोमी) मानव शरीर की संरचना से संबंधित है।

7.3.2 मानवमिति

मानवमिति (एन्थ्रोपोमेट्री) मानव शरीर के आकार और अनुपात (दोनों मृत एवं जीवित) के साथ संबंधित है। एन्थ्रोपोमेट्री के ज्ञान का उपयोग प्राचीन काल से मिस्र एवं ग्रीक द्वारा किया जा रहा था। मानवविज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक एन्थ्रोपोमेट्री की नींव ब्लूमेनबॉक द्वारा रखी गयी थी जिसे पॉल ब्रोका, डब्ल्यू. एच. फ्लॉवर, रूडॉल्फ मार्टिन इत्यादि द्वारा आगे बढ़ाया गया। वनज मापने का स्केल, टेप, कैलिपर्स–स्लाइडिंग, स्प्रेडिंग और स्किनफोल्ड, एन्थ्रोपोमीटर, बॉडी वॉल्यूम टेंक्स एवं बायोइलेक्ट्रिकल इम्पिडेंस एनालाइजर्स उपकरण का उपयोग एन्थ्रोपोमेट्रिक मापों में शारीरिक आकार एवं शारीरिक संरचना के मापन हेतु किया जाता है। इसी प्रकार रेडियोग्राफिक उपकरण, एक्स–रे स्कैनर और अल्ट्रासाउंड डेसिटोमीटर का उपयोग हड्डी के द्रव्यमान, स्किन के नीचे की वसा, घनत्व एवं दुबले शरीर का द्रव्यमान निर्धारण के लिये होता हे। एन्थ्रोपोमेट्रिक माप आबादी में पूरे शरीर या उसके हिस्सों के सापेक्षिक आकार या आकृति के निर्धारण में मदद करता है। इस प्रकार के अध्ययन से विभिन्न आबादियों में पर्यावरणीय परिस्थितियों के संदर्भ में वृद्धि में भिन्नता की समझ को बढ़ावा मिलता है।

7.3.3 वंशावली विश्लेषण

वंशावली वंशानुगत स्थितियों का पारिवारिक इतिहास है। इसका उपयोग विरासत में मिले पैटर्न और वंशानुक्रम के प्रतिरूपो की पहचान के लिये किया जाता है। पेडिग्री विश्लेषण एक शोधकर्त्ता को एक परिवार में बीमारियों की विरासत के तरीके को खोजने, पहचानने और विश्लेषण करने में मदद करता है। वंशागति की प्रणाली चाहे विकार प्रभावी या अप्रभावी हो, ऑटोसांमल या एक्स–लिंक्ड हो, का निर्धारण वंशागति के विशिष्ट प्रारुप को देखकर किया जा सकता है। उदाहरण के लिये एक्स–लिंक्ड बीमारियों में माता से पुत्र में संचरण होता है जबकि महिलाओं में यह एक अप्रभावी जीन के रूप में गुजरता है, क्योंकि पुरूषों में एक्स क्रोमोसोम पाया जाता है। पुरुष सामान्य रूप से एक्स–लिंक्ड जीन से प्रभावित होंगे, जबकि ऑटोसोमल विकारों में पुरुष एवं महिलाएँ के समान रूप से प्रभावित होने की संभावना होती है।रानी विक्टोरिया की पारिवारिक रेखा एक्स–क्रोमोसोम लिंक्ड बीमारियों, जिन्हें हीमोफीलिया B,जिसे लोकव्यापी रूप से क्रिसमस रोग के नाम से जाना जाता है, का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इस स्थिति में इस बीमारी के पुरुष उत्तराधिकारियों में रक्त का जमाव नहीं होता। पेडिग्री का अध्ययन प्रभावित व्यक्तियों और उत्परिवर्ती वाहक की पहचान करने में मदद करता है। इस डेटा से वाहक स्थिति का जोखिम परिवार के अन्य सदस्यों के लिये या एक संक्रमित बच्चे वाले युगल की संभाना का आकलन किया जा सकता है।

7.3.4 सेरोजेनेटिक्स

सेरोजेनेटिक्स सीरोलॉजिकल प्रोटीन के अध्ययन से संबंधित है। इसमें लक्षणों के आनुवांशिक आधार के निर्धारण हेतु सीरम (रक्त का प्रोटीन घटक) में प्रोटीन बहुरूपता के अध्ययन को शामिल करता है। भौतिक/जैविक मानवविज्ञानी द्वारा उपयोग किये गए उपरोक्त तकनीकों पर अधिक जानकारी के लिये शिक्षार्थी पाठ्यक्रम बीएएनसी 101 की इकाई 4 को भी देख सकते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

12) ' मानवमिति(एन्थ्रोपोमेट्री) केवल मृत मानव आबादी का अध्ययन करती है।' निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य।

.....

.....

.....

.....

.....

13) 'सीरोजेनेटिक्स रक्त में प्रोटीन घटक का एक अध्ययन है।' निम्न कथन सत्य है या असत्य।

.....

.....

.....

14) 'वंशावली और पेडिग्री क्या समान है।'निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य।

.....

.....

.....

.....

.....

7.4 सूचनाकर्त्ताओं के बिना फील्डवर्क

पुरातात्विक मानवविज्ञान सामग्री अवशेषों के अध्ययन के माध्यम से मानव अतीत को पुनर्संगठित करने का प्रयास करता है। यह मानवविज्ञान की एकमात्र शाखा है जो जीवित मानव आबादी से संबंधित नहीं है। डेटा संग्रह में किसी भी मानव या गैर–मानव सामग्री के अवशेष शामिल होते हैं, जो मानव गतिविधियों से जुड़े होते है, जो बीते समय में मानव जीवन को अनावृत करने में मदद करते हैं।

7.4.1 अन्वेषण

अन्वेषण मुख्य रूप से पुरातत्व एवं मानव विज्ञान से संबंधित एक अंतर्विषयक जांच है। इसका उद्देश्य पुरातात्विक स्थलों की संभावनाओं को पहचानना और समझना है ताकि मानव और गैर–मानव सामग्री को सुलझाया जा सके। कई बार पुरातात्विक महत्व वाले स्थल निर्माणकारी गतिविधियों के दौरान अकस्मात् खुदाई द्वारा बाहर निकल आते है। हालांकि, प्रशिक्षित पुरातात्विक मानवविज्ञानी विशेष मानचित्रों, जैसे जियोलॉजिकल वेजिटेशन, कृषि, मिट्टी, वर्षा, प्राकृतिक संसाधनों इत्यादि के आधार पर किसी एक क्षेत्र की स्थलाकृति को अंतर्दृष्टि देता है जो पूर्ववर्ती मानवीय गतिविधि के स्थान हो सकते है, और वे प्रयोग से स्थानों के अन्वेषण की योजना भी बनाते हैं। ये स्थान निर्वाह, खाद्य–उत्पादन और खरीद, व्यापार आदि से संबंधित भी हो सकते हैं। मोहनजोदड़ों और हड़प्पा सभ्यता का विश्लेषण करें तो हम देखेंगे कि ये नदी के समीप थे जिससे व्यापार एवं खेती हो पाती थी। अन्वेषण में मूलरूप से उत्खनन किये बिना संभावित मानवगतिविधि हेतु एक साइट का विश्लेषण शामिल होता है। ये खुदाई से पहले का प्रथम कदम है। अन्वेषण में विभिन्न तकनीक उपयोग किये जाते हैं जैसे फील्ड वॉकिंग, एरियल फोटोग्राफी, मैग्नेटोमीटर सर्वे, इलेक्ट्रिकल रेसिस्टेविटी सर्वे, प्रोबिंग, रिमोट सेंसिंग एवं जियोग्राफिकल इंफॉर्मेशन सिस्टम।

7.4.2 उत्खनन

उत्खनन (खुदाई) वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित रूप से मिट्टी की गहरी परतों को खोद कर निकालना है ताकि छिपे हुए अतीत को उजागर किया जा सके। जैसा कि पहले कहा गया है, मनुष्य के अवशेष और उनकी भौतिक संस्कृति पुरातात्विक अध्ययन के लिये रीढ़ की हड्डी के समान है। अतीत के मुनष्यों के जीवन को पुनर्निमित करने के क्रम में, उनकी भौतिक संस्कृति जैसे मिट्टी के टूटे हुए बर्त्तनों के टुकड़े, मोती, सिक्के, गहने, शिलालेख आदि कहानी को पुनर्रचित करने में मदद करते हैं। पुरातात्विक उत्खनन की विधि एक अनुक्रम का पालन करती है जिसमें प्रथम है किसी साइट की खोज के बाद उस खाई का लेआउट निर्मित करना। किसी भी उत्खन्न के दौरान

स्ट्रैटोग्राफी को रिकार्ड करना महत्वपूर्ण है, जोकि आरोपण के नियम का पालन करता है। जब सामग्री को निकाला जाता है तो उसे एक प्रारुप, जिसे कलाकृतियों के प्रलेखन के नाम से जाना जाता है, के अनुसार लेबल करने की आवश्यकता होती है। प्रलेखन में साइट का विवरण जहाँ सामग्री प्राप्त हुयी थी, खुदाई की तारीख, खाई का विवरण, सामग्री के प्रकार, गहराई एवं कलाकृतियों का मापन शामिल होता है।इसके उपरांत कलाकृतियों के फोटो एवं ड्राइंग तैयार की जाती है। यह कार्य साइट से वस्तु को निकालने के पहले एवं सफाई और धूल हटाने के उपरांत किया जाता है।

7.4.3 वर्गीकरण

उत्खनन के बाद सामग्रियों का वर्गीकरण किया जाता है, जिसमें सामग्रियों के समूह शामिल होते हैं। वे सामग्रियाँ जो किसी समूह के अंतर्गत नहीं आती, उन पर अलग से लेबल लगाया जाता है। पत्थर उपकरण एवं मिट्टी के बर्तन के लिये टाइपो–तकनीकी वर्गीकरण सबसे अधिक अनुसरण किया जाने वाला वर्गीकरण है। ज्यादा विवरण हेतु कृपया बीएएनसी 103, इकाई 1 देखें।

7.5 सारांश

इस इकाई में हमने शिक्षार्थियों को उन उपकरणों और तकनीकों से परिचित कराने का प्रयास किया जिनका प्रयोग एक शोधकर्त्ता क्षेत्र में डेटा एकत्र करने हेतु करता है। इस इकाई का मूल उद्देश्य शिक्षार्थियों को क्षेत्र में सही उपकरणों और तकनीकों के चयन में सक्षम बनाना है जो कि उनके द्वारा चयनित विषय पर आधारित है। अब तक शिक्षार्थी शायद इस बात से अवगत हो गए होंगे कि मानवविज्ञान अनुसंधान के संचालन में शोधकर्त्ता फील्डवर्क के संचालन हेतु एक या अधिक उपकरण और तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं। यहाँ, हमने डेटा संग्रहण के दो स्रोतों की गहराई से चर्चा की, प्राथमिक एवं द्वितीयक जिनका डाटा संग्रहण में उपयोग किया जाता है। मानवविज्ञान की विभिन्न शाखाओं में प्रयुक्त उपकरणों और तकनीकों के विहंगम अवलोकन के साथ अवलोकन, साक्षात्कार, जीवन इतिहास, केस अध्ययन, वंशावली (जिनियोलॉजी) एवं फोकस समूह चर्चा पर विस्तृत चर्चा की गई है। हालांकि एक चरण था जिसने, कोविड–19 महामारी के दौरान मानवविज्ञान के क्षेत्र में, विशेष रूप से लॉकडाउन के दौरान, जब आवागमन प्रतिबंधित था एवं सेल्फ क्वॉरंटाइन एवं सोशल डिस्टेंसिंग एक प्रथा बन गयी थी, ने चुनौती पेश की थी। कार्यरत मानवविज्ञानियों ने इस चुनौतीपूर्ण स्थिति को स्वीकार किया एवं अपने घरों को एक फील्ड–साइट में परिवर्तित कर दिया। कई लोग अपने परिवार के सदस्यों जैसे, माता–पिता, भाई–बहन, बच्चों और पत्नी से संपर्क करने लगे जो सूचनाकर्त्ता बन गए थे और शोधकर्त्ताओं ने अवलोकन, साक्षात्कार, केस स्टडी के माध्य से डेटा संग्रहण का कार्य किया एवं जिनियोलॉजिस्ट परिस्थितियों एवं रीति–रिवाज, जिनकी घर पर जाँच हो सकती है, का निर्माण किया। अन्य लोगों ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को विभिनन पहलुओं पर डेटा संगहण हेतु इस्तेमाल किया।

टेलीफोन, मोबाइल फोन, आदि का प्रयोग टेलीफोनिक साक्षात्कार के लिये किया गया जबकि कुछ लोगों ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वितरित करने हेतु प्रश्नावली को तैयार किया। इस प्रकार मानवविज्ञानियों का कार्य कभी बाधित नहीं हुआ बल्कि यह

तकनीकी सक्षम प्रक्रियाओं के साथ नए सिरे से जारी रहा, जिससे सूचनाकत्ताओं तक पहुंचा गया और शोध कार्य हुए।

7.6 संदर्भ

Fontein, J. (2014). 'Doing research: fieldwork practicalities'. In *Doing Anthropological Research* edited by Natalie Konopinski. London and New York: Routledge. Pp. 70-90

Goode, W. J. and Paul K. Hatt.(1981). *Methods in Social Research*. Tokyo: McGRAW-Hill International Book Company

Kothari, C. R. (2009). *Research Methodology*.New Delhi: New Age International Publishers

Langness, L. L. (1965).*The Life History in Anthropological Science*. New York: Holt, Rinehart and Winston

Malinowski, B. (1922). *Argonauts of the Western Pacific: An account of native enterprise and adventure in the Archipelagoes of Melanesian New Guinea*. London: Routledge and Kegan Paul

Young. V. P. (1996). *Scientific Social Surveys and Research*. Delhi: Prentice Hall of India

7.7 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

1) डेटा संग्रह के प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत
2) खंड 6.1 देखें।
3) खंड 6.1.2 देखें।
4) ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की
5) खंड 6.2.1 देखें।
6) सत्य
7) असत्य
8) हर्बर्ट स्पेंसर
9) सत्य
10) सत्य
11) असत्य
12) असत्य
13) सत्य
14) असत्य

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY